काव्य संग्रह

विविधा

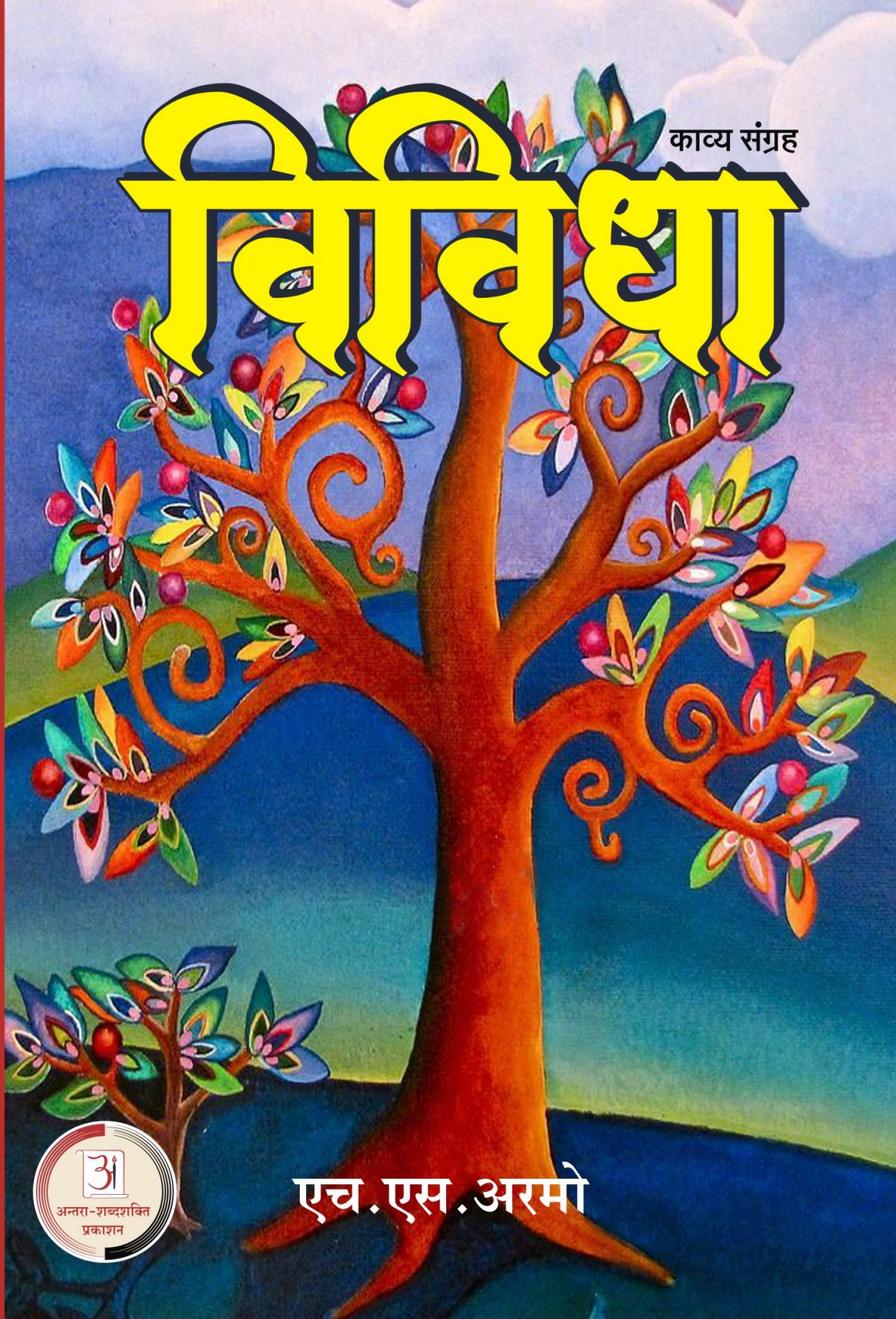

एच.एस.अरमो

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

विविधा (काव्य संग्रह)

विविधा

एच.एस.अरमो 'अरमान'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-242-5
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www-antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, एच.एस.अरमो 'अरमान'
मूल्य- 250.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY H.S. ARMO 'ARMAN'
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

दो शब्द

मैं अपनें माँ-बाबूजी के चरण कमलों में यह कृति समर्पित करता हूं।

प्रस्तुत पुस्तक शीर्षक '**विविधा**' (काव्य-संग्रह) मेरी पूर्व रचित काव्य-संग्रह शीर्शक-ममता की छाँव के बाद यह द्वितीय काव्य-संग्रह आप सुधि पाठको के समक्ष प्रस्तुत है। इस काव्य-संग्रह का शीर्षक 'विविधा' रखने के पीछें मेरी मंशा यह है कि इसमें समाहित कविताएं पर्व, जयंती, घटनाक्रम, मौसम, समसमायिक विषय बिन्दु एवं मानवीय जीवन दर्शन को दर्शाते हुए सहज-सरल और सुंबोध बनाने के लिए आम प्रचलित हिन्दी भाषा शब्दों का प्रयोग किया गया है, ताकि सभी स्तर के पाठकगण इसके भाव से परिचित हो सकें, ऐसा मेरा छोटा सा प्रयास है। अतः यह विविधता को समेटी हुई काव्य कृति है।

मैंने मानवीय संवेदना के साथ-साथ वर्तमान गतिविधियों को भी ध्यान रखा है, जिससे नव-साहित्य सृजको को भी लेखन की प्रेरणा व ऊर्जा मिल सके और समाज में घटित समसमायिक बातों से परिचित हो सकें। इसमें काव्यशैली गद्यात्मक रूप में छंद-मुक्त रखी गई है ।

अंत में यह कहना चाहूंगा कि ये काव्य-संग्रह मेरे लिए एक धरोहर की तरह है। इस कार्य के प्रेरक व्यक्तित्व मेरी जीवन संगिनी, परिवार, मित्रगण व विशेष रूप से रमा प्रेम-शांति टेकाम, बालाघाट मध्यप्रदेश का सराहनीय सहयोग रहा है। इस कविता का कम्प्यूटर टाईपिंग कार्य को श्री आकाश कौशिक, रायपुर द्वारा संपादित किया गया है। अतः सुधि पाठको से विनम्र अनुरोध है कि प्रेरणात्मक सुझाव सादर आमंत्रित है, ताकि सतत् लेखन कार्य में निखार लाने की गुंजाईश बनी रहे।

एच.एस. अरमो
''अरमान''
मो.नं.-९४२५२०२८०३
रायपुर, छत्तीसगढ़

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	आदतें इंसान की	७
2.	भारत का गांव	८
3.	गुरू दक्षिणा	९
4.	मानवता क्यों सिसक रही है?	१०
5.	होली का रंग... समय के संग	१२
6.	महानता	१३
7.	पर्यावरण की बर्बादी	१४
8.	नारी-शक्ति	१५
9.	फूलों का नसीब देखों	१६
10.	अकेलापन	१८
11.	भटक न जाना	२०
12.	हे मॉ सरस्वती	२१
13.	वक्त का मुसाफिर	२२
14.	रिश्तों के अर्थ	२३
15.	अलविदा २०१०	२५
16.	मेकअप	२६
17.	कागज	२७
18.	खुदा की तलाश	२८
19.	अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन दिवस	२९
20.	भूख	३१
21.	रक्तदान दिवस	३२
22.	योग और जीवन	३४
23.	नारी का रूप बनाम मॉ का रूप	३५
24.	हंसी	३६
25.	मेरे बचपन के दिन	३७
26.	कॉच और रिश्ते	३९
27.	बेबस किसान	३९
28.	विश्व-शांति दिवस	४०
29.	मौसम का मिजाज	४१
30.	बिछुड़ते पल	४२
31.	वर्ष २००५ का अंतिम सप्ताह	४३

32.	लाड़ली	४४
33.	तुलना	४५
34.	संदेश	४५
35.	अमिट निशानी	४६
36.	जगत जननी	४७
37.	दहेज.. प्रतिशेध	४८
38.	कॉटे	४९
39.	एहसास	५०
40.	फूलो सा हंसना	५१
41.	परिधान	५२
42.	नया साल	५३
43.	वक्त के आईने में	५४
44.	मौसम के साथ	५५
45.	बलिदानी शहीद वीर नारायण सिंह	५६
46.	श्रध्दांजली- डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी को	५७
47.	गौरव-गाथा	५८
48.	१४ नवंबर बाल दिवस	५९
49.	अहिंसा का पुजारी	६०
50.	कर्मठ पथ की राह .....समर्पित दिव्यांगजनो को	६१
51.	प्रभु-महिमा	६३
52.	पाषाण	६४
53.	हे पथिक	६४
54.	गौ-माता की महिमा	६५
55.	माँ की महिमा	६६
56.	डोली	६७
57.	यौवन की मादकता	६८
58.	बदलाव जमानें का	६८
59.	मौसम बदलते हैं	६९
60.	भटका राही	७०
61.	फासला	७१
62.	मानवता	७३
63.	रस्सी	७३
64.	झील	७३

65.	समय-चक्र	७४
66.	कतरनें	७५
67.	शराब	७५
68.	कांटे और फूल	७६
69.	सलाखें	७६
70.	रेत	७७
71.	गहना	७७
72.	गुलों का एहसास	७८
73.	हंसना है कितना मुश्किल	७९
74.	वक्त की कलम सें	८०
75.	घटनाक्रम	८१
76.	बसंत बयार	८२
77.	होली उत्सव बहार	८३
78.	चाहत कुछ पानें की	८४
79.	फूलों की प्रदर्शनी	८५
80.	हिन्दी दिवस	८६
81.	पानी बनाम नीर	८७
82.	रिश्ता बनाम रिश्तें	८८
83.	नया साल आया..... २००८	८९
84.	राष्ट्रीय अभियंता दिवस	९१
85.	मुरझाए फूलों का मोल	९२
86.	कैंसर रोज-डे	९३
87.	सफर	९४
88.	कामचोरी	९५
89.	चाहत खूबसूरती की	९६

आदतें इंसान की

आदतें-इंसान की..
उसकी पहचान है बनाती
सजाती है, उसके व्यक्तित्व को,
निखारती है, उसके अंतश के ज्ञान को,
और दिलाती, सम्मान-इंसान को।।
आदतें-इंसान की...
अक्सर, कर देती है, उसको अपमानित,
किसी के चोरी करने की आदत,
तो, किसी के बुरी आदतें और व्यवहार।।
आदतें-इंसान की...
बन जाती है- अक्सर शौकें
पर, अच्छी शौकें, उसे लक्ष्य-परख बनाती
और गलत शौकें... उसे लक्ष्य से,
हैं अक्सर भटकाती।
दोस्ती करों, सोच-समझकर,
वादा न करो किसी से...
सब-कुछ कर गुजरने का...
नौ-जवान हो तुम अभी...
अधूरे हैं, सपने तुम्हारे...
तुमको रखनी हैं, नई बुनियादें...
इसलिये.. चलना हैं, सम्हलकर-सम्हलकर,
बहकते कदम... अनजान राहों की ओर...
ले जाते हैं अक्सर,
उनको अंधी-गलियो की ओर...
बरबाद जिंदगियाँ होती उस ओर।।
आदते इंसान की...
समय के साथ,
पर्यावरण के अनुकूल बदलते रहती हैं...
उम्र के साथ, सजती व संवरती हैं...
पर इस जहान में...
किसी को मिलती हैं ढेंरो खुशियाँ,
तो किसी को मिलते है अनेकों गम।
पर, 'अरमान' कह रहा है तुमसे... आज,
हौसले पस्त मत कर तु इंसान,
हर हार के बाद जीत होती है...
यदि तुम, हारते नहीं,
तो जीत होती न, कभी किसी की....
यही है जीवन की कड़वी
सच्चाई और जीवन दर्शन।।

भारत का गांव

बैलों की घण्टियों का सुर,
जब होवे मुर्गे की बांग,
देवे गांव में, नित भोर का पुकारा।।
ले दातौन-मुखारी,
करते नित कामों की शुरूआत लोग,
हैं जहां रहते निर्मल भोले-भाले लोग।
कुम्हार की चाक, लुहारों की धौंकनी,
खेंतो में चलती रहटों की आवाजें,
ये सब, करती सुप्रभात की नित स्वागते,
ऐसा प्यारा है गांव हमारा।
देख सको तो देखो,
जान सको तो जानो,
सुर बदल सको तो,
इसका सुर बदल दो,
खुशहाल देखना चाहते हो तो...
इसको, अपनी सारी खुशियाँ, लुटा दो।।
क्या हम, इसकी सजीवता को,
कोई नया सपना दे सकते हैं...?
तो, आओ हम-सब मिल-जुल के ये संकल्प करें,
ऐसा हो भारत का, प्यारा गांव हमारा,
जहाँ हो आपस में नित भाई-चारा...
इसे दें दें, हम नव-प्रकाश,
नव-ज्योति का प्रकाशित नारा,
ऐसा हो प्यारा, गांव हमारा...।
जिससे आगे बढ़ता जाय,
प्यारा ये देश हमारा।।

--ooo--

गुरू-दक्षिणा

ऊचाईयों में पहुंचकर भी,
मैं बौंना ही था...
कल्पवृक्ष की छाया थी मुझमें,
फिर भी, अधूरा था, मैं,
पर, मै जान न सका था,
आज तक...
क्यों एकलव्य ने,
अंगूठा गुरूदक्षिणा में
दान किया था...?
श्रीकृष्ण सारथी,
क्यों बने थे अर्जुन के...?
थी घटना महाभारत की,
पर सबक जिन्दगी जीने का
ये बाते, हमकों सीखा गई
गुरू बिन ज्ञान अधूरा
वायु बिन, तन अधूरा
ज्ञान बिन, मस्तिष्क अधूरा
अधूरा को पूरा करने
फलदार वृक्ष बनना होगा
तनकर नहीं, अक्सर झुकना सीखों,
फिर समझोगे तुम,
झुकने का मर्म कुछ और है,
जैसे झुके थे, प्रभु के चरणों में महावीर।
ज्ञान प्राप्ति की भूख जिसे रहती है
उसकी घघरी जीवन अमृत से,
सदैव भरती ही, रहती है।।

--ooo--

मानवता क्यों सिसक रही है?

मानवता क्यों, सिसक रही है....?
नलकूपों, कुओं से, जल है, गायब...?
माँ की गोद है, क्यों सूनी...
तार बिन वीणा और सुता बिन,
उसका जीवन अधूरा,
जीवन संसार सरित प्रवाह हुई क्यों अधूरी,
क्यों हत्या की जाती है, अब कन्या भ्रूण की....
माँ के हाथों, माँ के आंखो के सामने...
उसकी ममता का,
क्यों नवसृजन तुमने है मिटाया...
वेदना, बेशक, माँ तुझमें रही होगी,
पर, दरिदों के सामने, एक न तेरी चली होगीं...।
सबब, दहेज-दानव का बता, तुझको डरा-धमका...
तेरी अस्मिता से, एक घिनौना, खेल किया...
उस पल, तू चुप नही थीं, न ही थी तू मौन,
मैं जानता हूं, मन में उठा था, तुझमें समुद्र सा तेज...
सांसो का ज्वार-भाटा.. और,
रक्त-धमनी की भी, गति बढ़ी थी...
फिर भी क्यों...? तू...
मौन.. और चुपचाप, गुमशुम सी पड़ी थी...
दीवारों से बाहर, आवाज न जाये,
यही सामाजिकता की मर्यादा तूने ओढ़ी थी ।।
सजा का हश्र मालूम था तुझे...
पर हैवानियत की जद्दो... जहद के आगे...
सिर्फ गंदगी और बदनामी में भी,
उस पल की हवस-पूर्ण खुशी उनकों दिखी थी....।
मैं, कैसे अपने आपको बदलूंगा...
मैंने, मंदिर-मस्जिद-गुरूद्वारे-गिरजाघर
की दीवारों को भी देखा...
कभी गीता के उपदेश, कुरान की आयाते,

गुरूवाणी के शब्द और
बाइबिल की आयात भी सुनी हैं...।
पर भीड़ में जाकर,
आज के प्रदूषित वातायान में,
न जाने, ये बाते कहां खो गई हैं,
मैं भी, सोचता हूं... ऐसा क्यों हो रहा है...?
जबकि आज हर साधन मौजूद है...
उदारीकरण विज्ञान के चमत्कारी... बाजार में,
शायद चेतना के चिन्तनशील, गहराई में,
वो अमिट छाप की... मुहर लगाने वालों...
क्यों अब, मिल नहीं पाते,
क्या मैं सही सोचता हूं...?
इस पर, अक्सर बहस क्यों छिड़ जाती है,
कहते हैं लोग,
जमाने में कितने ही संत-महात्मा,
दार्शनिक, साहित्य और आडियो-वीडियो,
की भरमार है, फिर भी
इनका असर, क्यों कम दिख रहा है...?
इस प्रश्न का उत्तर हम-सबको देना ही होगा...
वरना घटनायें, इतिहास बन, तारिखें गढ़ती ही चली जायेगी,
और मानवता, यूं ही शर्मशार, होती ही रह जायेगीं।।
इन घटनाओं पर,
कभी तो, मानवता की आवाज उठेगीं...
शनैः-शनै वह भी गगन में उड़ते विमान की तरह,
आँखो से ओझल होने की कहानी दोहरायेगीं,
आओ, कोशिश करें,
घर व शिक्षा के मंदिर और हम-सब,
स्वयं अपनी राहों को सुधारें...
तब ही, कुछ अच्छा निशान, भविष्य के लिये छोड़ पायेगे...
तभी माँ की ममता, स्त्री का स्त्रीत्व और,
ममतामयी छवि को फिर से वह बरकरार रख पायेगी ।।

--ooo--

होली का रंग-समय के संग

होली का रंग देखो,
छाया है सब में यारों
उथल-पुथल मन के रंग
कौतुहल मचा रहे समय के संग...।
आओ-देखो बज रहे ढोल-नगाड़े...
थिरक रहे लोग टोलियों के संग
भूल गये है, सारे गम,
मस्ती का चढ़ा है ऐसा रंग,
वैमनस्यता का धुल गया है,
चढ़ा था जो रंग...।
मधुबन की होली, गोपियों की ठिठोली,
थिरक रही सारी गोपियाँ बना-बना के टोली,
श्याम रंग में डूबी है राधा
मन से खेल रही हैं होली,
रास-रंग में, तन-मन है डूबा,
गा रही मिसरी सी मीठी बोली...।
होली का रंग, देखो...
छाया है सबमें यारों...
रंगो की हसरत है रंगना,
चाहत नहीं हो, फिर भी कैसे रंगना,
मन में हो चाहत का रंग,
कभी भी छुपता नही है ये रंग...
इसीलिये डूब जाओं श्याम रंग के संग...।
अरमान की पिचकारी से छूट रहा है ऐसा रंग,
चढ़ जाये जो ऐसा रंग, जीवन की बगियाँ में,
बिखरते रहें, सदा खुशियों के रंग...।
होली आयी है, खुशियाँ खूब मनाओं, रंगों के संग...।
आज यहाँ हो अपनों संग,
न जाने कल कहाँ होगे और किसके संग....।।

--ooo--

महानता

शिल्पी हाथों से,
चोट खाते, पत्थरों ने पूछा...
क्यो मुझको चोट देता है...
क्यो मेरे आकार को,
साकार बनाता है।।
तू भी जान ले इतना,
मेरी चोंट मे,
तेरे हाथों को भी,
चोट क्या नही आई है...
यहाँ चोट दोनो को आई है ।।
पर तेरी भूख मिटाने...
मैं अपना आकार बदल दूंगा,
क्योंकि... त्याग से ही,
औरों का जीवन बनता है।।
इसी दर्शन को जिन्दा रखने,
मैं चोट पर चोट सहता आया हूं ।
दौलत की भूख ने,
रिश्तों को निगल लिया है,
इसीलिये दिल्ली में,
मामा ने भाँजे को,
किडनेप कर लिया है।
शौहर बदलने की भूख ने,
प्रेमी से मिलकर,
अपने शौहर को ही खत्म करवाया है,
कैसे उसने अपने सम्मान को,
समाज के सामने घटाया है।।

--ooo--

पर्यावरण की बरबादी

पर्यावरण के भयावह बरबादी ने,
प्रकृति का रूप-श्रृंगार है बदला,
कही सूखा तो कही बाढ़ से तबाही,
हो रही वृक्षो की अंधा-धुंध कटाई,
और जमीन से खनिजों की,
हो रही लगातार है खुदाई,
पहाड़ो को है, हमने तोड़ा,
और पहाड़ रूपी भवनों से शहरो में है जोड़ा,
धरती के दर्द को, कोई नही जानता,
आहत होती, भीतर ही भीतर,
उसके मर्म को कोई नही जानता,
आज, मानव की विविध खोजो ने,
धरती मे, तबाही का मंजर खड़ा है किया,
इससे ही प्रकृति की खुशहाली मिटेगी,
और हरियाली भी घटेगी,
फिर इंसानो की तकलीफे भी बढेगी,
और होगा न ढंग से अनाज,
न मिलेगी हमको शुद्ध प्राण-वायु,
क्या करेगा, तू इस धन-दौलत, रूपये-पैसे का,
सोचना होगा, इनकी बदौलत,
चल जायेगी अपनी जिन्दगी,
पर भोजन सामग्री ही,
न होगी धरती में तो,
क्या हम-तुम बिन भोजन, बिन प्राण वायु के,
कब तक जीवित रह पायेगे,
आओ पर्यावरण बचायें, प्रकृति का बेवजह दोहन रोकें,
प्रकृति संरक्षण हेतु पेड़-पौधे लगायें।।

--ooo--

नारी-शक्ति

नारी कहती...
अपने आपसे...
शिक्षा से आज हमारा...
बीते कल से बेहतर है,
हम आज, जागरूक और
आत्म स्वावलंबी है...
यही नारी-शक्ति की,
सशक्त और गरिमामय पहचान है।।
हम, परिवार, समाज, राष्ट्र की धुरी
रीढ़ और कमान है...
यही नारी-शक्ति की शान है।।
मुझमें सब कुछ देखो, मैं हूं सब में,
कल था वो सपना था,
आज जो कुछ है, अपनी खुद की बुनियाद व पहचान है।।
नारी-शक्ति, गुलाम नही, आम है,
नारी परदे में नही, अब नारी के पीछे परदा है,
इसीलिये उसकी तस्वीर, साफ नजर आती है,
नार-शक्ति है अनमोल और महान,
माँ के रूप में...
ममता, मेहनत बिखेरे,
नारी-शक्ति की ताकत को पुरजोर जोड़े,
हर जगह, कर्तव्य परायणता से,
बना रही पहचान ।
है आज भी नारी शक्ति महान,
मै ही काली, मै ही दुर्गा, पार्वती, सरस्वती और लक्ष्मी हूं...
पूजते हो श्रध्दा से मुझे...
सुरक्षा, संतान ज्ञान और धान्य के लिए...
पर भूल जाते हो,
नारी-शक्ति है कितनी... अनमोल और महान
सारा-संसार, इसके बिन अधूरा है,
सृजन की कृति हूं मैं,
पर तुम्हारे संग, बिन अधूरी हूं।।

--ooo--

फूलों का नसीब देखो

फूलों का नसीब देखो,
कभी गीतों में, तो कभी गजलों में, छाये रहतें हैं।।

फूलों का नसीब देखो...
कुछ तो पेड़ों में ही, सूखकर झड़ जाते हैं...
और कुछ फूल, मंदिरों, मजारों, मठों में भेंट चढ़ जाते हैं।।

फूलों का नसीब देखो...
कैसी नृतकी के जुड़े में, भी गुंथा होता, तो कभी वेणी में सजा होता,
और कुछ फूल मुजरे की सेज में गजरा बन, महका करता।।

फूलों का नसीब देखो...
कैसे सुहागन की, सेज में सजता...
और कुछ फूल कफन के, ऊपर चढ़ा करता ।।

फूलों का नसीब देखो,
कैसे गुलकंद बन जाते...
और कुछ फूल मसलकर, इत्र बन खुशबू बिखेरते।।

फूलों का नसीब देखो...
कैसे नेता और मूर्तियों के गले लगते...
और कुछ फूल शहीदों की शौर्यता, के लिये, शौर्यचक्र बन सजते।।

फूलों का नसीब देखो...
कैसे रात में चाँदनी की, रोशनी में है खिलते,
और अपनी तीखी खुशबू की,गंध जमाने में बिखेरता,
कुछ फूल ऐसे भी होते, जो भोर में, प्रभा-किरण देख कुमुदनी, कमल बन हैं खिलते।।

फूलों का नसीब देखो...
कैसे अल्पना बन, ओणम त्योहार की शोभा बनते,
और कुछ फूल गुलशन में कैसे सजते-धमकते।।

फूलों का नसीब देखो...
कैसे घर के द्वार पर वन्दनवार बनते...
और इक फूल बाला की वेणी में सजते...
और किसी नारी के कोट की शोभा बनते।।

फूलों का नसीब देखो...
कैसे महुआ का फूल बन, कभी शक्तिवर्धक गुलकंद तो,
कभी सूखकर गरीबों का भोजन बनता,
तो कभी सड़कर गलकर मद्यपान है बनता।।

फूलों का नसीब देखो...
कैसे भीगकर सड़कर, पीसकर रंग बनते,
और केशर का फूल, कैसे दवाई और मसालों की शोभा बनते।।

फूलों का नसीब देखो...
कैसे अपने परागों को तितली, भौरों को लुटाता नवसृजन की हसरत में...
और कुछ फूलों का पराग-रस मधुमक्खी का छत्ता बन,
मोम और मधुरस की मिठास बिखेरता।।

फूलों का नसीब देखो...
कैसे उपवन में खिलकर भौरों से आलिंगन कर फलों और बीजों का सृजन करता,
और कुछ फूल खिलकर-मुस्कुराते, पर, उनका जीवन, बांझपन लिये होता।।

फूलों का नसीब देखो...
शिवा को धतूरा चढ़ता.. देवी को गुलहड़ चढ़ता... साँई को पीला फूल चढ़ता...
मजारों में लाल गुलाब चढ़ता... तो राम-श्याम, गणेशजी को सभी फूल चढ़ते,
पर, गुरूद्वारा और गिरजाघर में, कभी कोई फूल नहीं चढ़ते।।

फूलों का नसीब देखो...
पीला-फूल दोस्ती का प्रतीक बनता... सफेद फूल सौम्यता, शांति स्वरूप होता,
और लाल गुलाब, प्रेम उल्लास का प्रतीक होता।।

फूलों का नसीब देखो...
फूलों ने जीवन को महकाया है... फूलों ने प्रेमी जोड़े को जुड़वाया,
फूलों ने कीट-पतंगो-पक्षियों को, अपना पराग रस लुटा, उनकी प्यास को बुझाया है।।

फूलों का नसीब देखो...
ईलाजों में, ऐरोमा थेरेपी बन जाते, तो ऑक का फूल आयुर्वेद में काम आते,
और एक तरफ, कपास का फूल, रूई बन, तार-तार हो,
तन का खूबसूरत लिबास बन जाते।।

फूलो का नसीब से सीखों यारों,
तुम भी जग में त्याग करना।।
--ooo--

अकेलापन

कोई कहता, मुझसे... अक्सर...
मै अकेला हूं... मेरा कोई साथी नहीं...
मै किसी से, जुड़ पाता नहीं...
ऐसा मुझमें, जुड़ने की बात नहीं
इसीलिय-अकेलापन, है मेरे जीवन में...
अक्सर देखा करता...
कई लोग, साथी का साथ लिये,
मौजों का अंजाम लिये...
कितने हैं, अलमस्त...
क्या साथ, हो जब किसी का...
क्यों बदल जाती है, जिन्दगानी, कभी किसी की...
क्यों नरक, बन जाती है जिन्दगी किसी की...
मुझे तो, ऐसा लगता है...
लोग, नाहक साथी पर करते हैं शक
या उसके विचारों को...ठीक से समझ नहीं पाते हैं ।।
साथ-साथ बनकर जीना, अकेलेपन से अच्छा है,
घुट-घुटकर, जीना भी, मरने के समान ही जीना है ।।
आओं चंद दिनों की जिन्दगी को, खुशियों में बदल दें....
बना ले, कोई साथी...
लिखें फिर इक नई ईबारत,
दुनिया, देखेगी, कहते रहेगी...
देखो, कितना अच्छा है, इनका साथ
कुछ को होने लगेगी की, मन में जलन,
पर, तुम न करना, साथी पाकर घमण्ड,
मन में रखना, फिर भी संतोष...
देखो तुम रहोगे, हर पल खुश,
और पा लोगे सुख के पल...
दिखते नहीं, सुख के पल...
कैसे बीते, समझ नहीं आते ये पल...
जब आते, जीवन में, अवसाद के भरे पल
हर पल, पल-पल होता बोझिल मन...
पहाड़ सा, लगता, हर वो पल
कभी-कभी छोड़ देते, साथी भी, साथ...
तब लगता है, ये दुनिया में,

क्या... साथी भी, पहनने के वस्त्र तो नहीं...?
पुराने होते ही, दूर कर देते उनको हम...
आज, फटे वस्त्र, कोई पहनता नही...
ना ही, फटे वस्त्र, सिलकर कोई पहनता नही,
सुई में धागा, पुराने वस्त्रों को...
सिलने-जोड़ने डालता-पिरोता कोई नहीं।
पर, जीवन का सार, यही है,
हरपल, हर परिस्थितियों में,
रहो साथ-साथ, पंछियों की तरह...
फेफड़े मे श्वास की तरह....
रहना ना तुम अकेले कभी.भी...
अकेलापन है, जलते-बुझते अंगारे...
ढूढ़ लो, ऐसा कोई भी साथ...
कटते रहें, तुम्हारे शेष पल...
बिखेर दो, अनुभवों का वो सार...
पुकार रहा, भटका राही और समाज,
पर जुटाना होगा, तुमको इतना साहस
तब अकेलेपन से भीड़ में जा पाओगे...
रखना होगा अपने पास, अनुभव के खजाने
लुटाने होंगे, जादूगरी से उनको भी...
वरना, लोग कभी भी जुड़ न पायेगे...?
फिर तुम अकेले रह जाओगे....
ऐसे ही इक दिन दुनिया से चले जाओगे,
कुछ नहीं किया ऐसा... तुमको...
मरने पर, दुनिया तुमको कहकर याद करेगी,
न बनेगा तुम्हारा मठ और न कभी मकबरा,
भीड़ में हुये थे पैदा और गुमनामी में मर जाओगे,
या ऐसे ही खो जाओगे...।
ऐ मालिक अकेलेपन का दर्द...
किसी को भी, भूल से भी न देवें...
दे दे उनको भी,
एक-प्यारा सा अच्छा साथी।।

--ooo--

भटक न जाना...

ऐ दोस्त,
राह से, तुम कभी भी, भटक न जाना।
आये, कितनी भी मुश्किले...
पर, तुम, निरन्तर, आगे बढ़ते ही जाना।
कभी भी, अपनी राह से... तुम भटक न जाना।
यदि थक भी जाओ तो?
कर लेना, घड़ी भर आराम
पर, अपनी सोच न बदलना,
करते रहना, मन ही मन... मंथन-चिन्तन...।
पर, कभी, अपनी राह से, तुम भटक न जाना।
लगे, कभी, साथ चले, कोई
उस घड़ी, तुम कर लेना... मुझको भी, तुम याद,
रहूंगा मैं सदा तुम्हारे आस-पास,
बनकर हम साया की तरह।
देता रहूंगा, हर पल, हिम्मत तुझे...
तुझे भटकाने कितना भी
करे कोई तेरा मजाक, या कहते रहे बेवकूफ तुझे,
पर, तेरा मकसद हो साफ, विषय की हो परख
उसे, समझाने का, रखो तुम दम ।
पर,... कभी भी, अपनी राह से.... तुम भटक न जाना...
मिल जाये मंजिल तुझे... हो जाये, पूरा मकसद तेरा,
पर, भूलना नही मुझको...
दिया हो, जिसने हर घड़ी तेरा साथ
वरना, तू पाकर भी मंजिल, अपनों को खो देगा...
एक दिन रह जायेगा अकेला...
अरमान तुझसे कह रहा है...
वक्त करते रहे ढेरों सितम...
फिर भी अपनी राह से... भटक न जाना तुम...
रखो हमेशा जिसने, दिया, हर घड़ी तुम्हारा साथ...
यदि मकसद जिन्दगानी है, यही जीवन का सच्चा सार।।

--ooo--

हे माँ-सरस्वती

हे माँ-सरस्वती... सरस्वती,
सदियों से तुम फैला रही जगत में...
ज्ञान ज्योति का, जगमग प्रकाश...
फिर भी अभी तक...
छाया है, कुछ लोगो में, क्यों, घोर अंधकार...।।

हे माँ सरस्वती... सरस्वती...
हे माँ तुम, सुन लो, मेरी प्रार्थना,
मैं अबोध, अपने लिये, कुछ नही मांगता...
पर मांगता, औरों के लिये, सुख-समृध्दि की याचना...।

हे माँ...
वहाँ लुटा देना, तुम मुक्त-हस्त से...
अपने, ज्ञान की भण्डारशाला...
होगा, वो भी ज्ञानशील...
और बन जाये... सदा के लिये, जगत में...
कर्मठ-कर्मशील तकदीर वाला...।

हे माँ... सरस्वती... सरस्वती,
सदियों से, तु फैला रही....
जगत में... ज्ञान ज्योति का, जगमग-प्रकाश।
सब रूठ जाये, जगत में मुझसे...
पर, तू भूलकर भी, कभी न रूठना...
क्योंकि तेरे बिन, मैं इक पग भी... चल नही, पाऊंगा...
ना ही किसी बेबस को, नई राह ही, दिखा पाऊँगा...।

हे माँ...!
तुम शिक्षा का... मुझकों दे दो, ऐसा वरदान...
मैं, सदा, जलता रहूं दीपक बन,
औरो तक फैलता रहूं... जगत में, ज्ञान का, दिव्य-प्रकाश...।।

हे माँ सरस्वती... सरस्वती...,
सदियों से तुम फैला रही...
जगत में, ज्ञान ज्योति का, जगमग प्रकाश ।।

--ooo--

वक्त का मुसाफिर

मुझें नहीं पता...
जाना है कहाँ...?
किन्तु, मैं, भटका, कदापि नहीं...।
क्या..?
अक्सर... ऐसा होता है... सभी के साथ...।
चुन लो,
तुम, एक मकसद को,
आगे बढ़...
ये वक्त के मुसाफिर...
तुमकों अक्सर...
राह में, काँटे भी मिलेंगे...
तो कभी फूल भी,
पर, मत घबराना इक पल भी...
डर से, न बदलना अपनी डगर...
कभी भी, न आना, किसी के बहकावे में।।
ये वक्त के मुसाफिर...
वक्त का, मुसाफिर न बन...
वक्त के साथ चल,
कभी, हवा की दिशा में,
तो कभी, हवा के विपरित...।
चुनी हुई राह और चुने अपना मकसद...
हो जाओ, उसके साथ...
करते रहो, हरदम प्रयास,
और कर लो, तुम, जी-तोड़ मेहनत...
होगी कामयाबी की मंजिल आपके आस-पास।
युवा-पीढ़ी तुम,
इतनी मस्ती में कही बहक न जाओ...?
कि तुम्हारा वर्तमान भी डूबे और भविष्य भी...।।
ये भीड़-तंत्र है,
कुछ अलग, कर दिखाना...
कुछ हटकर, चलना होगा...
और होगी, नजरें सबकी, आपकी ओर...
और तुम्हारी नजर होगी...
सिर्फ, अपने मकसद की ओर...।
मैं कहता हूं... तुझसे...
वक्त का मुसाफिर बन...
सफर यूं ही कट जायेगा।।

--ooo--

रिश्तो के अर्थ

रिश्तों के अर्थ...
समय के साथ बदल रहे हैं।
अपनों ने,
अपनों का ही गला घोंटा है,
विश्वास दिला, नई राह दिखा,
मझधार में,
बीच में ही छोड़ा है।।
जमाने में किसे दोस्त कहे...
खंजर तो, सभी के पास है,
पर, वार कब, कौन करेगा...?
अब, पता लगाना, है कितना मुश्किल...
सब जिन्दी लाश है...
लाँघकर बढ़ना चाहते है।।
खुद को वे,
ज्यादा वफादार और,
होशियार मानते है,
शायद खुदा का,
करिश्माई जादू है- उनके पास...
पर वो बन्दें नही जानते...?
शतरंज के खेल में,
अक्सर, शय और मातें हैं।।
कहावत है कि...
यहीं है- स्वर्ग और नरक...
चित्रगुप्त-यमराज-यमदूत सब यहीं है।।
वक्त से बढ़कर कोई नही दूजा...
वक्त ही देता... हमे सजा और ईनाम...
वक्त के होते... दिन और रात...
वक्त देता... खुशी और गम भी।।
हे परमेश्वर... दे दो... सकारात्मक सोच,
मानव में इंसानियत जाग जायेगी।

नव वर्ष-२००६, आ रहा है...
समय-करेगा...
तुम्हारा इंतजार...
कर लो... कुछ ऐसा काम...
रिश्तों के अर्थ... सार्थक हो...?
काश रिश्तों को...
न होने दो बदनाम...
बो दो, खुशियों का बीज,
तुम, सारे अवाम में।।
महकता रहे ये चमन...
हर मजहबी, रिश्तों के संग
हो जायेगा, सार्थक रिश्तों के रंग
न होगे, वैमनस्यता के कांटे...
और खिलते रहेगे,
खुशियों के गुल...
और बिखरता रहेगा...
खुशबू की तरह, शांति का रंग...।।
सही मायने में...
रिश्तों का अर्थ, यही है....
इसे बिखरने, टूटने न देना...
वरना, रिश्तों की... अहमियत खत्म हो जायेगी...
इसीलिये अरमान कह रहा है आपसे...
मानवता का रिश्ता बनाये रखिये...
हर जगह हर, पल, खुशियाँ होगी...
तुम्हारे साथ-रिश्तों के अर्थ साथ।।

--ooo--

अलविदा-२०१०

यूँ ही बीत जायेगा,
यह साल, यह महीना...
और ये पल...
कर लें हिसाब...
नही तो,
बीत रहा है ये साल
क्योंकि... हौले-हौले...
कदम रख रहा... नया साल २०११
अलविदा-२०१०
अपनों और परायों का रहा साथ,
अब जुड़ना-बिछुड़ना,
और थी मन में कुछ,
शिकवा-शिकायत और खट्टी-मीठी बात
अलविदा-२०१० कह दो दिल से आज...
और सुखद पलों को तुम रख लो साथ,
और दुःखद पलों को, भूला दो आज...।
कह दो दिल आज...
अलविदा-अलविदा २०१०
और आ रहा है नया साल-२०११
अवसाद मन से,
नये साल में, रखो न, तुम कदम...
वरना, खुशियों से,
रह जाओगे,
सदा तुम महरूम,
अलविदा-अलविदा... २०१०
तुझको भूला ना पायेगे,
और करते रहेगे हम,
दिल से सदा याद...।।

--०००--

मेकअप

मैंने अपने आपसे पूछा,
न जाने लोग,
क्यों करते है मेकअप,
जवाब मिला..
कमियों को छुपाने,
जिसके चेहरे में हो ढेरों कमी,
कैसे हो उसका मेकअप,
सीधा-सवाल और उसका सीधा-जवाब
तुम आईना, क्यो देखते हो...?
काले से गोरी की तुलना,
गोरे से काले की,
पर कोयल-कौवा में,
अक्सर काले से काले की तुलना,
पर मेकअप उनके काम न आया,
आवाज-बोली, का मीठा-रसीलापन
दोनों की अहमियत बतलाया...।
बन्दर से पूछो,
मेकअप है या नकल,
बंदिश मदारी की,
पेट की लाचारी से,
किया है, मेकअप,
घट रहे हैं, जंगल,
इसलिये हम कर रहे हैं,
ऐसा मेकअप...।
मेकअप, अपनी जिन्दगी में करोगे तो,
सँवर जायेगी जिन्दगानी तुम्हारी, और
मेकअप का तुम, रहस्य समझ जाओगे...।
और, सदा मेकअप कर,
हर समस्या से निजाद पाओगे।।

--ooo--

कागज

कागज कह रहा आपसे,
मुझ पर क्यों लिखते हो,
दिल को, बहलाने के लिए,
काश मैं, कागज न होता,
'गज' होता तो
मस्ती में इठलाता चलता...।
वनस्पति की, कुटाई-पिसाई...
बन जाती है, लुगदी,
दबा-दबा के बना देती,
मेरी हालत पतली...
बन जाता हूं फिर कागज।
वो सब-कुछ मुझमें,
समा जाता,
जब मैं स्याही से रंगता,
बन जाता अक्सर भूत (इतिहास)
वर्तमान और भविष्य की धरोहर...
मैं हूं एक कागज...।
कहीं किताब तो,
कही लेटर पेड...
मैं हूं आपका प्यारा,
हमदर्द, खुशियों का साथी
लेखक, साहित्यकार और
सभी जरूरत मंदो का...
बहुमूल्य रूप... इक कागज...।
जिसने भी, मुझसे,
गज भर की दूरी बनायी है,
उसका जीवन,
कोरा कागज बन कर ही रहा गया है।।

--ooo--

खुदा की तलाश

खुदा को मै,
दर-दर ढूंढ़ रहा हूं...
भटकने पर भी,
खुदा नही मिला मुझको,
बताओ यारों...
खुदा कहाँ मिलेगा ?
कुछ लोगों ने कहा...
खुद तेरे दिल में छिपा बैठा है,
खुदा-तो खुद-ब-खुद....
खुद गया था, तेरे दिल में,
जब तू पैदा, इस धरती पर हुआ था...
जब तू अनजान था,
आज समझदार हो गया है...
और मुझे तलाश कर रहा है...
कभी मस्जिद, तो कभी काबा मैं,
तू भटक मत, न नही तू भटका है,
पर तू, अपने भटकन को दूर कर,
सत्कर्म की रहा चुन,
लोगो का परमार्थ कर
ज्ञान का बीजारोपरण करता चल,
मैं धीरे-धीरे तेरे हृदय मन में बसता जाऊँगा,
जिस दिन तू थक जायेगा...
उस दिन तू मैं से निकलकर...
सिर्फ मेरे लिये सोचने लगेगा,
उस दिन, तुझे मेरे दर्शन हो जायेगे,
वो दिन कब आयेगा,
तेरी साधना ही बतलायेगी,
खुदा की करते रहे इबादत,
ये राह काँटे की है,
पर मंजिल भी दूर नही
मरिचिका है, मन की,
जितने पास जाओगे,
वो उतने ही दूर होते जायेगी,
सुकून मिलेगा मन को,
बस मन से, बस चुन ले,
अब राही तू अपनी सच्ची राह...।।

--ooo--

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन दिवस

देखो यारों...
प्रकृति के हैं, अनूठे रंग,
कैसे फैलें हैं चारों ओर...
ऐतिहासिक ढांचे और स्मारक।
आओ कभी कर आयें, इनका भी सैर,
क्योंकि इसमें, छुपे हुये हैं...
घटनाओं, स्मृतियों के....
अनुछुये, अनमोल सारे खजाने...।
आज की, तेज गति से,
भागती-दौड़ती दुनियाँ में,
सुकून और वक्त मिलता है कहाँ...
ऐसे में, हम अपने, कुछ पलों को
आओं यादगार बना डालें,
इस पर्यटन दिवस में...
पर्यटन करने के बहाने से।
लोग, अक्सर कहते हैं...
यदि हमारे, बहाने खुशनुमा हो तो....
जीवन की राह बदल देते हैं.....
मन को मिलती है, ढेरों खुशी....
जिसे हम, कभी भूला भी नहीं पाते हैं।
घूमते रहोगे सदा, तो बढ़ते रहेंगे,
अक्सर अनुभव व ज्ञान के खजानें,
नये दोस्त बनेगें, नया परिवेश भी मिलेगा,
फिर बदल जायेगा, तुम्हारा जीने का अंदाज,
और पल में दूर हो जायेगें, वो अवसाद भरे पल।
पर्यटन के बहाने, अक्सर बिछुड़े हुए को,
हमने मिलते हुये पाया है, और...
बुझे चेहरों पर, कैसें छा जाती है खुशियों की बहार
जब होते हम...
प्रकृति के नजदीक व मनमोहक स्थल के तलें..।
आओ, इक पल सोंचे,
घर से निकलकर, पर्यटन कर आये,
पर्यटन का शौक, उम्रदारज का ना रखता कोई बंधन,
मन में हो उमंग और हसरत तो...

बरबस निकल आते है पंख...
परिन्दों की तरह,
मुक्त गगन में उड़ने के लिये...।
पर्यटन-दिवस में...
आओ-पर्यटन के बहाने...
दुनिया की सैर करें...
औरों से जुड़े,
मन का बैर भी दूर करें...
अपनी संस्कृति व
राष्ट्रीय अच्छाईयों को बॉटें,
तभी दुनिया को,
हम एकता के सूत्र में बाँधें...
वैमनस्यता को मिटाने...
थोड़ा चलकर, थोड़ा रूककर...
कहीं पड़ाव तो डालें...
कैसे बदलता है समाज का स्वरूप...
इतिहास की घटना,
पर्यटन के प्रभाव से अछूता नहीं है...।
तभी तो हुआ, युगान्तर परिवर्तन...
पर्यटन के साथ...
मेरी अभिलाषा है कि...
हर कोई, घर की चार दीवारी से निकल कर,
कहीं, कुछ तो घूम आये,
कैसे लगता है...
जरा लौटकर हमको बतायें...
पर्यटन का संदेश यही है,
घर से निकलोगे तभी...
समन्दर की गहराई और
गगन की ऊँचाईयों को नाप सकोगे....
फिर तुम पाओगे...
हर दिलो में, अपने विचारों से,
ऐसे ही जुड़ते चले जाओगे ।।

--ooo--

भूख

हम इंसानों को...
न जाने भूख, क्यों लगती है..?
जब-जब, अतड़ियाँ सिकुड़ती है,
शरीर में, तब कमजोरी सी लगने लगती है?
और तब-तब, जोरों की भूख लगती है ।।
यदि भूख न होती,
मुँह की इतनी कीमत भी नहीं होती...
और पेट को, कोई पूछता भी नहीं
और ना ही कहीं भी...
भूख की महामारी, भी नहीं होती।
भूख दिया, तूने हमको मालिक....
तो इंसानों को उतनी समझदारी भी दे...
वरना जानवरों की तरह....
अपनी अजीब सी भूख मिटाने...
इंसानियत को चबा रहे है वे कच्चा...।
जब-जब, जीव-जन्तु, पौधें में होती है भूख,
भोजन से मिटती है उनकी भूख।
मिलती तृप्ति और उनको स्फूर्ति,
साथ ही, मिले शारीरिक वृध्दि भी,
भूख का रखोगे, तुम ख्याल सदा...
तभी, स्वस्थ शरीर तुम रख पाओगे...
भूख के लालच में, कुछ भी,
किसी समय भी खाओगे...
शरीर तुम्हारा बेडौल होता जायेगा,
और तुम बीमारी के शिकार बन जाओगे...।
सदा भूख की पहचान...
चाहे शारीरिक हो या मानसिक...
उस पर नियंत्रण, रखता है जो...
वही जीवन-शैली में स्वस्थता का राज पाता है,
और अमरत्व की गणिका की ओर कदम बढ़ाता है।।

--ooo--

रक्तदान-दिवस

हर मानव सें,
करो न तुम कभी,भी..
मानवता का भेद ।
रक्त-रंग से,
विज्ञान ने जाना-पहचाना
लहू का रंग, एक है तो क्या हुआ?
पर रक्त समूह, होता है अलग-अलग
इसकी जाँच और पहचान कराना जरूरी है,
हर इंसान को,
चाहे हो गरीब या अमीर,
या हो, बच्चा-जवान और बूढ़ा।
रक्तदान, जब हुये मानव में मानव से,
रक्त-समूह का मेल जरूरी है भाई,
रक्त-दानी का, रक्त शुध्द हो...
जांच कराकर ही, दान करें...
निःस्वार्थ भाव से...
पैसों की लालच में, किया रक्तदान...
कभी-कभी किसी के लिए,
काल भी बन जाता है।
रक्तदान है, एक महादान
एक अस्वस्थ को, स्वस्थता मिलने का सहारा
रक्तदान में,
जाति भेद, ऊँच-नीच का भेद
कभी न करना,
पहले जीवन बचाने की सोचना
डॉक्टर की सलाह को अवश्य मानना...।
रक्तदान से,
न होगा शरीर कमजोर,
रक्तदान, महा-कल्याणी दान है...
जिससे मिल जाती,
औरों को जिन्दगानी...।
रक्त-दान सा कोई सत्कर्म नहीं दूजा,
सेवा का, एक नायाब है तरीका...
किसी को मालूम नहीं....
पर फायदा, उठाता है कोई और...

इसीलिये, रक्त-परीक्षण से...
अपना रक्त समूह अवश्य जानें...
मुसीबत व दुर्घटना में...
यही जाँच, स्वयं को
औरों को जीवनदान दे सकती है।
मानव शरीर में रक्त की मात्रा को भी जाने,
उसमें हिमोग्लोबिन की रक्त में कमी,
एनीमिया के होते शिकार,
हिमोग्लोबिन का रक्त कण,
सिकल की तरह हो,
तो, वो सिकल सेल का रोगी होता,
इसका इलाज और ध्यान रखना जरूरी है,
वरना, मौत करीब पंहुच जाते है ।
शरीर में,
श्वेत-रक्तकणिकाये...
है शारीरिक प्रतिरोधक
रोगाणु से लड़ने के वफादार...
हरदम करते सुरक्षा,
जीवाणु और विषाणु से... ।
हे, मानव, हे, महामानव...
जीवन की डगर में,
जीने की लालसा में,
रक्त और रक्त-परीक्षण,
रक्त-दान की
अहमियत को तुम जानो,
इसकी जानकारी औरों
तक फैलाओं, होंगे खुद-भी सुरक्षित
और दूसरों को भी
सुरक्षित रखने हेतु...
राष्ट्रीय चेतना में सहयोग करें...
और
एक अच्छे नागरिक होने का
बोध करावें ।।
--ooo--

योग और जीवन

मानव जीवन में योग....
सकारात्मक जीवन शैली देता है।
जैसे-परिवार से सम्बन्ध,
सहपाठी का साथ
अकेले में दूसरों का साथ.....
तनाव-भय मुक्त,
वातावरण देता है...।
मानव जीवन में योग....
योग शिक्षा-संयमित-स्वस्थ जीवन,
को बनाये रखने में,
अत्यंत सहायक होते है...।
जीवन, लक्ष्य पाने में...
आत्मबल रूपी....
टॉनिक का काम है सदा करती...।
जीवन में गणित...
धनात्मक अर्थात योग
सदा वृध्दि की ओर अग्रसर करता है।
जिससे सुख-शांति और समृध्दि
मिलने की संभावना बढ़ जाती है...।
इसके ठीक विपरीत....
ऋण अर्थात घट जाना...
कम होना...
इसकी गहराई से,
आओ... चिन्तन-मंथन करे तो,
सिर्फ अवनति है,
अन्यथा...
योग
हर दृष्टि से सुखदायी है।

--ooo--

नारी का रूप बनाम माँ का रूप

बागों में खिली, एक कली,
नन्ही बिटिया की तरह
पलती-बढ़ती
पल-पल, हर-दिन, हर-रात
बिटिया से, तू नारी बनी
कली से तू पुष्प बनी
धरा ने, गढ़ी ऐसी कृति
नारी एक बार माँ बन जाती
तो वह, हमेशा माँ ही, रहती।
पूछो, उस नारी से
जिसकी कोख है सूनी
सब-कुछ रहकर भी
फिर, भी है कितनी बेबस
और अधूरी
कारण कुछ भी हो
धन-दौलत, सब फीके पड़ते
ममता की है, दौलत बड़ी
आँचल में हो, जब कौतुहल की घड़ी ।
तुम हो अभी... सिर्फ नारी...
गुरूर न करना, तुम अपने यौवन का
राह न, भटकाना अपने जीवन का
नारी से माँ का रूप, तू पाकर रहा
तुम गलती से भी, बहक न जाना
यही संदेश-देता अरमान तुम्हें।।

--ooo--

हँसी

न जाने क्यों...?
खामोश होते जा रहे है लोग,
न जाने क्यों...?
गायब हुयी,
चेहरे से हँसी
हँसी तो आपकी अपनी है
मिलती है हर जगह।
प्रकृति, परिवार दोस्तों मे,
घुलने-मिलने और सहयोग से
किसी पर हँसना,
हँसी नही..
हँसी तो मन को करती आनंदित।
हँसी होती जब,
फूलों सा खिलता चेहरा...
और, अनायस आतुर होता मन,
औरों से जुड़ने मिलने के लिए...।
इक हँसी, दे जाती,
हमको भरपूर तंदुरस्ती...
हँसना है तो,
खिल-खिलाकर हँसो ?
फिर देखोगे...
हर दिन खुशनुमा होगा...
जरा एक बार,
हँसकर तो देखो...।।

--ooo--

मेरे बचपन के दिन

कितने सुहाने थे,
मेरे बचपन के दिन,
बरसात में भींगना,
पानी में उछलना, कूदना,
कागज की कश्ती बनाना,
उसे तैरते देखना...।
गिल्ली-डण्डा, लट्टू का खेल,
कभी, तितलियों को पकड़ना...
झूले का खेल...।
कितने सुहाने थे...!
पल में हो जाता,
दोस्तो से बैर...
कुछ से हो जाता,
पुनः मित्रता का मेल...।
रहती, बड़ो से, ढ़ेरो शिकायत...
पर, मिलती जब मिठाई...
हो जाती, सारी दूर शिकायत।
बातें, कभी, जब पूरी न होवे तो,
नाराजगी, जल्दी-आती...
उतनी जल्दी भी...
नाराजगी दूर हो जाती...।
कितने सुहाने थे...
पर, अब, वो हँसना कम हुआ,
नाराजगी के साथ,
तनाव भी बढ़ा,
न जाने, दोस्ती हो रही,
धीरे-धीरे कम...
ढेरों शिकायत है जमाने से,
पर दूर नही होती,
और बढ़ती जाती है,

न हो रही है, थोड़ी भी कम
नादानी नही पर
नादानी की हरकत होती।
कितने सुहाने थे...
वक्त ने, करवट है बदली,
आम-आदमी, हुआ भ्रष्ट...
चला जबसे, लेन देने का खेल,
पैसों वालो का अब हुआ खेल,
बिन पैसे वालो का निकल रहा तेल...।
क्या...मेरा बचपन
कोई लौटा सकता है...?
क्या, अब मैं,
बचपन की तरह, जी नहीं सकता...
यही है... जीवन का सबक
यही है... परिवर्तन का खेल....।
कितने सुहाने थे...
मेरे बचपन के वो दिन...।।

--ooo--

काँच और रिश्ते

काँच बने रेत से,
रेत से निकले अभ्रक और सोना,
पर, रिश्ते होते है अनमोल
इसे, काँच तरह न तोड़िये...
वरना, बिखर जायेगी...
और टुकड़े-टुकड़े हो चुभेगे...
बहेगा, मन का लहू
और होगे जख्म गहरे व नासूर
और, काँच बने रेत से...
रेत की तरह...
क्यो हो रहे...
आज ये रिश्ते ढेर...
समाज इसका जवाब मांगता है।।

--ooo--

बेबस-किसान

हमने बोये थे, खुशहाली सपनों के बीज,
अपने खेतो में सारा ।।
हम तो थे ही खुश, साथ ही परिवार हमारा।।
जब, खेतों में, फसले पक-आई,
हुआ बहुत दुःखी मैं....और मेरा परिवार सारा,
क्योंकि, मुंह खोले खड़ा था, साहूकार जो हमारा।
फसलें भी बिकना थी उसी के द्वारा
ऐसी रीत बनाई किसने, मै था अपनी किस्मत का हारा,
मैं था बेबस, विवश और इक लाचारा ।
ये सौदा किया था मैंने, अपने हाथों, मैं दुखियारा,
मैं कसाई के हाथों कटते, बकरे की तरह...
मैं था, मजबूर बेबस और थका-हारा ।
मैं सोचता हूं क्या ऐसे ही...
इक दिन, हो जायेगें... हम बेसहारा ।।

--ooo--

विश्व-शांति-दिवस

क्यों हो रहा मानवता का,
चारो ओर हनन...
आतंकवाद, नक्सलवाद और भ्रष्टाचार से
सब चाहते है...
हो देश में... अमनो-शाँति...।
इंसानों में जब-जब भूख,
विलासता की बढ़ी है,
इंसान ने, किया है इंसानियत का खून...।
नित-वैज्ञानिक सोच ने,
प्रगति-खोज की चाह में,
पर्यावरण से किया है, खिलवाड़...
उतने ही, जिम्मेदार हम-सब
आओ राष्ट्र-शांति से, विश्व में...
शांति का संदेश फैलाये...।
धर्म, जाति, वर्ग संघर्ष, ऊँच-नीच का भेद
मानवता के है, ये सब कलंक
इसे हम, जड़ से मिटायें...
और विश्व-शांति का पैगाम...
यूँ ही, फैलाये...।।
हे नौजवानों, तुम सृजनकर्ता, समाज इस धरती के...
आशाये है, हमें तुम्ही से ...
बनाओं इस धरा को स्वर्ग...
या मिला दो गर्त में...
क्यों हो रहा मानवता का...
चारो ओर हनन...
आतंकवाद, नक्सलवाद और भ्रष्टाचार से
सब चाहते है...
हो देश में... अमनो शाँति।।

--ooo--

मौसम का मिजाज

रवि का दिल घबराया...
वो शनि से मिलने चला आया?
पूछ रहा... मन की उलझन की बात...
शनि बोला... जाओ राहु-केतु के पास।
राहु-केतु को सुनाया अपनी बतियाँ...?
मै हूँ बहुत दुःखी... पर क्यों?
मेरा तापीय प्रभाव हो रहा है कम...
जब से बढ़ रहा शीत-ऋतु का प्रभाव...
मुझे चिढ़ाने, धूप सेंकने बैठे रहते है लोग...
मुझे तरसाने हिमालय छोड़ रहा सर्द हवा
मौसम ने मिजाज बदला, रात हुई ठण्डी...
दिन में शीतल हवा, दुशाले की शामत आई...।
मुझे रवि, भास्कर, भास्कर, प्रभाकर को
दिनकर समझ पूछते तो है जरूर
पर, दीन-बन्धु लोग ही मुरीद है इसके ज्यादा...
रात उनकी कटती है, ठिठुरकर...
भोर की ताक में आग के अलाव से...
मेरे ताप का मजा, रात में ले रहे है...
मेरे तापीय-प्रभाव का,
मजाक देखो-कैसा उड़ा रहे है...?
देखा है, आपने अच्छे-अच्छे बदल जाते है...
नरम पड़ जाते है, झुक जाते है...
अक्सर मौसम के मिजाज के सामने...
फिर तो आप है...
मंथन... चिन्तन है आपके हाथ में...।।

--ooo--

बिछुड़ते-पल

शाक से, टूटते पत्तों का,
अंदाज बयाँ,
कैसे करूँ मैं...
टूटता है मन, सभी का,
कभी न कभी,
वो, दास्ताँ लिखूँ कैसे मैं...।।
हम-सब मिले थे,
वक्त के साथ
आज, बिछुड़ते पल है...
जैसे, मौसम बदले...
दिन और तारीखो की तरह...
जैसे बीत रहा, ये साल...
आओ कुछ बातें कर ले...
बीते, बिछुड़ते-पल की...
शायद गढ़ दे, इक नई बुनियाद ।
मेरी देहरी में दस्तक दे रहा,
समय का नया पल...
जैसे सुबह का उगता सूरज
उसका फैलता प्रकाश
शबनम की बूंदे, मोती सा दमक,
लिख रही, गुनगुना रही चिड़िया,
मस्ती में इठलाती तितलियाँ...
मानो नई सुबह, नई तारीख, नया साल,
दबे पाँव आया है...
कर लें स्वागत...
हमेशा बीतेगा...
ऐसे ही खुशी के पल दे दो...
खुशियो से उसका साथ...।।

--ooo--

वर्ष २००५ का अन्तिम सप्ताह

मेरे साथियों क्या तुम खुश रहना चाहते हो?
जरा अपनों को घर-पर
रविवार को बुलाइये...
थोड़ा गपशप, थोड़ा पकौड़े खाईये ।
हम अपनों से दूर खुशियाँ चाहते है...
दूसरा, सिर्फ सौदागर हो सकता है...?
चंद-सिक्कों के बदले व्यवहार दे सकता है,
मोल मे खरीदी हर वस्तु...
कुछ देर ही अच्छी लगती,
कुछ उपयोगी और कुछ बाद में...
अनुपयोगी बन जाती है...।
क्या...? आपने बीतने वाले वर्ष की,
तारीखों से पूछा उन्हे, अपनों का हिसाब दिया...?
सचमुच... फिर तो आप...
कभी-खुशी, कभी-गम के,
सागर में गोते लगाओगे...?
अभी भी कुछ तारीखे... समय,
तुम्हारे पास है...
कुछ लोगो ने भ्रष्टाचार का तोहफा दिया विगत वर्ष...
सुनामी का कहर था...।
पर... कुछ पल... तुम भी सम्हल जाओ...
कुछ अनुठी होगी घटना...मुझसे ना पूछो...
ये वक्त तुम्हें बतायेगा...वो तारीख...
इक... इतिहास बनकर रह जायेगा ।
स्वागत की देहरी पर... २००६ खड़ी है...
पर पल-पल का करना होगा इंतजार...।
अंतिम सप्ताह कैसा होगा...
जरा तुम सोचो तो...?

--ooo--

लाड़ली

लाड़ली सी... वो भोली सूरत में...
लिपटी-सिमटी, लड़की...।
घर की-वो... चहकती-फुदकती,
थी, नन्ही-सी प्यारी सी गुड़िया...।
धीरे-धीरे... लता की तरह,
बढ़ती ही चली गई...
और खूबसूरत-लाजवन्ती बन गई...
इक दिन, वो भोली सूरत में...
लिपटी-सिमटी, लड़की...।
वो... डरने लगी... एकाकीपन-सूनेपन से
डंसने लगा उसको..यौवन का, लदता भार।
आया, फिर इक दिन दुल्हन का श्रृंगार
कर दी... विदा... अपनों से,
जुदा, उन सखी-सहेलियों से
अपने, प्यारे-बचपन की यादों से...।
नया पाया था, उसने जीवन
नई थी दुनिया, नये-नये ये लोग
लगते कभी अपने तो कभी पराये।
लाड़ली थी... वो, भोली सूरत में
लिपटी-सिमटी सी.. प्यारी-सी लड़की...।
ससुराल में बनाती रही, सबको अपना
पर, वो थे लोभी देह-दहेज के नाम
होने लगा, उस घर में, हर-पल,
बातों-बातों में, कोहराम
कब तक, सहती
थी वो भी, अपनी माँ की, राजदुलारी लड़की
बन गई, अब जो औरत पर, दिखती, कुम्हलाया-सा फूल
और शूल के साथ फूल और फूल के साथ धूल
लाड़ली थी ।
अरमान कह रहा है
वो लाड़ली... लड़कियाँ...
हँसकर जी लो, इस पल को
कल हो, कैसा पल
मूक-प्रश्न, खड़ा है...
क्योंकि... मैं हूँ...
प्यारी सी लाड़ली लड़की....।

--ooo--

तुलना

तुलना न, ऐसे कीजिये
हीनता, उपज जाये।
तुलना
सौन्दर्य का
एक म्यान में दो तलवार।
तुलना
आगे बढ़ने की योजना, बिना अधूरी है।
तुलना...
हरदम... करो, अच्छाई की...
फिर, मंजिले होगी... तुम्हारे आस-पास ।
--ooo--

संदेश

आपका कृतित्व
परिवार की
मूक पाठशाला है
अध्ययन करता
हर कोई
सुख-समृध्दि आवे
वातावरण
ऐसा जब वो अपनावें।
--ooo--

अमिट निशानी

मैं, मैं हूँ
अपनी अस्मिता की अमिट-निशानी
धरा पर... रची गढ़ी... धरती माँ बन
आदम और हव्वा की कहानी।
मैं न होती
रहता अधूरा ये, संसार चक्र।
मेरी, महिमा के पुजारियों ने
नाम, दे दिया देवी, कभी पत्नी, तो कभी प्रेमिका
तो कभी, बहना, तो कभी सूता
ये है, मेरे रूप सृजन-श्रृंगार के।
मैने, जीवन भर बोझ सहा
फिर भी
अधूरी ही रही।
चलना चाहती हूं सदियों से, हम सफर बन के
गर तुमको, ठोकर लगेगी, सम्हालूंगी आगे बढ़कर
फिर भी, अधूरी मेरी प्यास
मुझमे छिपी ज्वाला को क्यों नहीं, पहचानते हो
मैं ही रणचण्डी
तो, बनी कभी, सौन्दर्यी मेनका
तो, कभी रजिया-सुल्तान
मैंने निभाया है कतर्व्य हर-पल
तेरी आन-बान, शान के खातिर
मुझमें कोमलता, करूणा, वात्सल्य का
अनुपम है भण्डार धैर्यता की
मैं हूं गिरीराज।
मुझे अशक्त न समझो
मुझको हर जगह पाओगे
मेरे कारनामें की मिशाल
खुद-ब-खुद राहगुजर बन जायेगी
महिला-महिला को देती रहे हरदम बल
तो ये महिला-सशक्तीकरण की
प्रखरता, यूं ही निखरती जायेंगी।

--ooo--

जगत-जननी

सीता, द्रौपदी और अनुसुइया,
कैसी थी, वह मइयाँ
जुल्मों की, थी दुखियां
पर अमर है, उनकी कहानियाँ।
ममता-मातृत्व माता की महिमा
इक, महिला-हिला देती है सिंहासन
इक, महिला-बना देती है, सुंदर राज-काज
इक महिला-कर देती है घर को आबाद
इक महिला-कर देती है घर को बरबाद
कह रही, कहानी महिला की।
आज तुम किसी की बिटिया,
सुना हो, परिवार की
कल हो जाओगी-शोभा ससुराल की
जरा सोचो-क्या करके दिखाओगी?
भौतिकता के पथ में चलकर कैसे जगत बनाओगी?
कर्म ही पूजा है, सतकर्म ही अजूबा है
राहे जीवन की, इतनी आसान नही
तुम सुनहरे सपने बुनो जरूर
पर, करना ना, उस पर गुरूर
हाँ... इक बात है पते की... वक्त की सिला पर...
बनती है... जीवन की आधार शिला।
जहाँ... दर्द भी है, जिन्दगी
कभी, खुशी भी है जिन्दगी...
तो काँटो की सेज भी है, जिन्दगी...।
महिला जगत-जननी है...
देती संसार को वह, नई जिन्दगी...
इसीलिए तुम... अपना वजूद पहचानों...
तुमसे कह रहा अरमान रखो तुम, ऐसा निशाँ ।
फना भी हो जाये, गर जिन्दगी
फिर भी रखे याद,
सारी दुनिया तुम्हे हरपल-हरदम।
सीता, दौपदी और अनुसुइया,
कैसी थी, वह मइयाँ
जुल्मों की, थी दुखिया
पर,, अमर है, उनकी कहानियाँ..।

दहेज-प्रतिशोध

शादी का मतलब है,
समाज में
जीवन, जीने का अनुबंध।
वर-वधु की इच्छा का सौदा
माता-पिता की इच्छा की पूर्ति
फिर, क्यो उठती दहेज-प्रतिशोध
की अक्सर बातें।
क्यो, अक्सर, मिटा देती, बेटी
बहु बन, अपनी जिन्दगी?
दहेज बना देह मिटाने का सौदा
सम्पन्नों की सौगत बनी दहेज
पर बन गया, समाज में कोढ़
ये ऐसा दाग है,
दिखती प्रत्यक्ष खुशी
पर,
वर की मिटती नही, भूख-कभी
धन-दौलत माँग की।
बेटी (वधु) का विरोध ही,
इक दिन, मिटा देगा,
दहेज की बात।
आज की नारी
जागृत एवं शिक्षित हो
यही गुहार है,
जन-जन से हमारी
तभी मिट सकेगा
दहेज रूपी दानव की महामारी।।

--ooo--

काँटे

काँटे गर न होते,
पौधे और वृक्ष, सुरक्षित न होते,
काँटो का, मोल है अनमोल,
काँटो से पौधों की, बनी पहचान,
बबूल, बेर, बेल और गुलाब के काँटे
पर, मानव में उपजे-बोये काँटे,
खुद को, दूसरों को हानि पहुँचाने,
सुख को दुःख में बदल देते
सुरक्षा के बदले
अक्सर असुरक्षित कर जाते।
काँटे की महिमा देखो,
मरकर, डाल से कटकर,
खेतों, बगीचों की,
बन जाती, अक्सर बागडोर
सुनार के हाथों में...
कानों में छेद करने के काम,
आती, बाला/महिलाये में,
तभी तो, कर्णफूल, जो पहन है पाती।।
काँटे ने शायरों, गजलकारों,
को भी नही छोड़ा
इसीलिये काँटा, लगा गाना जो बना,
बेरी का काँटा, गुलाब का काँटा
अक्सर चुभता या गड़ता
फिर भी बेरी-गुलाब के
मजे और सौन्दर्य-मूल्य में,
कोई कमी तो नही आई
पर, जीवन में, नागफनी न बनो,
जो उगे मरूभूमि में,
गुलाब बनों, फूल सा रहो, शूल की तरह,
न चुभो किसी के दिल म
जरा इक बार, हटकर,
सोचकर,
मंथन तो कर के देखो..।।

--ooo--

एहसास

दरख्तों पर तन्हाई का डेरा है,
फिर भी, परिन्दों का क्यो डेरा है।
वक्त ने ही, दी जिन्दगी
और वक्त ने ही मुझे लुटा है।।
जिन परिन्दों को दिया था पनाह
उन्ही के कारण ये हाल हुआ है।।
फिर भी अरमान मै खुश हूं
मै तिल-तिल मर रहा तो क्या हुआ
क्योंकि, दरख्तों पर तन्हाई का डेरा है।
फिर भी, औरो का, बसेरा तो हूँ
मेरी डूबती, साँसों को
परिन्दो की आवाजो ने,
जीने का एहसास कराया है,
इसीलिये, मैं खुद के लिये न जीकर,
और के खातिर जीये जा रहा हूं।
यही जीवन-दर्शन है
वरना, उजड़ते, दरख्तों को कौन पूछता है,
इसे भी समय के साथ गर्त-गर्द में
तन्हाईयों के लिये, मिटना है।
पर, क्या करूँ, कमबख्त
परिन्दों के ठौर ने, मुझे
मेरी पहचान को,
अबतक, जिंदा रखा है...?
इसीलिये 'अरमान' कह रहा...
आप सभी को दोगे साथ औरो का,
गर्दिशे-जिन्दगी में,
तुम भी, अगर किसी का साथ,
रफ्ताँ-रफ्ता यूँ ही
ये जिन्दगी गुजर जायेगी।।
एहसास एक समन्दर है
और सीप मे से मोती ढुढ़ निकालना है...।।

--ooo--

फूलों सा हँसना

फूलों सा चेहरा...
कितना होता है हँसी...
फूलों की ताजगी,
देती कितनी सुकून ।
फूलों सी मुस्कुराहट,
देती कितनी राहत...
फूलों सा हँसना... मुस्कुराना सीखे...
फूलों सा होगा... हरपल, हरदिन...
फूलों की खुशियों से,
भरा चेहरा देखकर...
और को मिलेगी फूलों सी खुशियाँ...।
आओं जतन से, इक पौधा...
फूल का लगाना
रोज-रोज, उसे पलते-बढ़ते और
फूलों से खिलता-लदते देखना।
क्या-आनन्द-रस भाव मिलेगा...
और जीवन-दर्शन में...
इसका मंथन तो, इक बार करके देखों ।।

--ooo--

परिधान

मानव की पहचान,
बनी उसकी परिधान।
जैसा परिधान, वैसा आचरण
बतलाता... दिखलाता समाज को।
साधु हो तो, गेरूआ,
साध्वी हो तो, सफेद अथवा गेरूआ
विधवा हो तो, अक्सर सफेद
नेता हो तो, खादी अथवा सफेद
अभिनेता हो तो, मेजिंग अथवा भड़कीले।।
मानव की पहचान
बनी उसकी परिधान ।
करते अक्सर, कपड़े, तन को ढँकते
जीवित मानव के, मन को हरते
मृत मानव का, कफन जो बनते
परिधान-तो मात्र
कपड़े से बनी, एक वेशभूषा है
सर्कस में पहनते, अजीब रंगो का कपड़ा
वह व्यक्ति बन सर्कस का जोकर
खुद भी हँसता और दुनिया को भी हँसाता
जोकर और परिधान के पीछे
छिपी अक्सर, जीवन की सच्चाई है
कहती कलम, मेरे भाई
परिधान तो
मानव की पहचान है।
परिधान, सोच-समझकर पहनोगे/चुनोगे
चेहरा, दमक उठेगा
समाज में सम्मान और रौब बढ़ेगा
पर, परिधान पहनकर
गुरूर मत करना
वरना परिधान की शान
धूमिल होगी और अपमान की
ज्वाला धधक उठेगी।।

--ooo--

नया-साल

शायद तुम-सब, सोचते होगे,
ये समय के पल
कैसे बीत गये
और नया-साल आ गया।।
लिखों, तुम नई ईबारत
समय-पल के नाम
बुनो तुम, नये सपने
गढ़ो तुम, नये आयाम
अधूरे सपनो को
पूरा करो तुम।।
देखो... नया साल आ गया...।
समय देगा, तुम्हारा भरसक साथ
समय प्रबंधन का, बनाओ तुम बजट
तुम्हारी सफलता की
होगी, मंजिल यहीं-कहीं
आस-पास...।।
सफल व्यक्त्वि की
बुनियाद यही है
भूल जाओ, अवसाद के पल
और चुन लो, नई खुशियों के पल...।।
देखो... कैसे बीत गये... समय के पल
और नया-साल आ गया।।
यही मंगल आशाये है
आप-सभी से मेरी... नव-वर्षाभिनन्दन पल का...
कर लो, खुशियों से स्वागत
वरना यूँ ही बीत न जाये ये पल
सदा खुश रहो, तुम सब
और खुशियाँ लुटाते रहो हरपल
कही, बीत न जाये नववर्ष के पल।।

--ooo--

वक्त के आईने में

वक्त के आईने में,
धुंधले हुये, कुछ चेहरे
घटनाओं के सागर में
ऐतिहासिक अस्थिरता का दौर
समय बन उभरा
पहेलियों की तरह...।
आओ भूलकर
नवीनता का, अध्याय जोड़े
ताकि... विश्व में हो...
सुख-शांति के सुखद पल...।
वक्त के आईने में
धुंधले हुये कुछ चेहरे
नववर्ष की उज्जवलता के साथ
ऐसा ही हम सबको मिले सुखद-पल
लगे ये है कितना अनमोल पल...।।
स्वागत के देहरी में
रखना खुला, अपने मन के द्वार
नव-वर्ष की खुशियाँ
लेकर आयेगी, ढेरो प्यार
ढेरो सपने, नया कुछ करने की आशायें...।
आओ-अभिनन्दन कर रहा...
तुम्हारा नया साल...
वक्त के आईने में...।।

--ooo--

मौसम के साथ

मैने उसे मौसम के साथ,
अक्सर बदलते देखा,
कभी बरसात में रोते हुये,
ठण्ड में छिपते-दुपकते हुये,
और गर्मी में कुम्हलाते हुये।
मैने कहा-तुम,
क्यों... मौसम की तरह रंग बदलते हो,
उसने कहा...
मैं ऐसा तो नही... कि...
बरसात में बाढ़ लाऊँ,
ठण्ड में आग जलाऊँ
बसन्त में पतझड़
और गर्मी, में तपिश बरसाऊँ
मेरा, मौसम की तरह बदलना,
तुम्हें क्यों, अच्छा नही लगता,
मैं गिरगिट नही...?
मैं वृक्ष भी नही...?
मैं, सिर्फ इक इंसान हूं
मेरी, फितरत है
समय के साथ चलना
वरना समय तुम्हें
बदल देगा या पीछे धकेल देगा...?
मैने उसे, मौसम के साथ,
अक्सर बदलते देखा है।।

--ooo--

बलिदानी शहीद वीर नारायण सिंह

अंग्रेजों का शासन,
और हुआ था भारी जुल्म
जंगल-बीहड़ो में,
हुआ-पैदा ऐसा शेर
भूखें लोगो के लिये,
लूटा अनाज और खजाना
मातृभूमि की रक्षा के खातिर
अंग्रेजो से लड़ते-लड़ते
हो गया इक दिन शहीद
झुलकर फाँसी के फंदे में
मरकर भी हुआ वह अमर
दे रहा आदिवासियों को
नई दिशा-प्रेरणा और
आत्मबलिदान का उत्सर्ग।
अमर रहे-तुम्हारा बलिदान
करते हम-सब तुझे
शत्-शत् नमन।।

--ooo--

श्रध्दांजली.. भारत रत्न डॉ.भीमराव अम्बेडकर

मुझे छूना था, कुछ लोगों के लिये पाप,
समाज में, ऐसी प्रथा हुयी थी, आम
उस काल में
शिक्षा पाना था, अछूतों को दूभर,
पर, मै हारा नही..
जरा भी हुआ न चितिंत,
किन्तु, त्याग.. तपस्या, संकल्प, शिक्षा और संघर्ष से
बन गया, मैं कालजयी युगपुरूष ।
दलितों के लिये जीना...
दलितों के उत्थान के लिये हरदम सोचना,
दलितों को... नई पंथ की दीक्षा...
१४ अक्टूबर १९५६ को दिलाकर, नव-बौध्दिष्ठ बनवाया ।
नई सोच, नई दिशा, नये संकल्प में,
जीने की अनवरत प्रज्ज्वलित मशाल, उन्हे है जो थमाया...।
मैं सोचता हूं मैं मर भी गया, तो क्या हुआ,
मेरे साहित्य मेरा कारनामा,
मुझे अनेकों दिलों का, मसीहा बनायेगा,
किसी के न चाहने से...
मेरे प्रयास, मेरी आस को, विराम नही लगेगा।
ऐसे ही महान विभूति को, भारत रत्न का सम्मान,
संविधान के निर्माता, प्रणेता को, हमारी सच्ची,
विनम्र श्रध्दांजली आज अर्पित है...
साथ ही यह कामना लिये... कि... सदा प्रज्जवलित रहे...
उनके अरमानों का दिव्य-स्वप्न,
जागृत होता रहे दलित-समाज में नई विचार-क्रांति की तरह
निरन्तर बढ़ते रहें उनके दिखाये पथ पर
सामाजिक उत्थान होता रहे
और समाज प्रगति के नये आयाम छुये,
आओं करें हम सदा उनके विचारों पर, मंथन व चिन्तन ताकि
दीपशिखा सा फैलता रहे उनके दिखाये पथ का प्रकाश।।

--ooo--

गौरव-गाथा

सिक्ख धर्म के प्रणेता और संस्थापक
गुरूनानक देव (१४६९-१५३९ ई०)
रहा है, इनका जीवन-काल
हिन्दू खत्री परिवार की,
अद्‌भूत रहे संतान...
दे एक निराकार ओंकार परमेश्वर की सीख,
हरदम किया, जाति-पाति का घोर विरोध
और न था आडम्बरों, संस्कारों पर विश्वास
किया संदेश फैलाने...
देश-विदेश में भ्रमण...
अपनी काव्यमय वाणी को रचाया-बसाया
जपजी ग्रंथ में सकारता को दिखलाया।
समाज में, सीधी और सच्ची वाणी से,
जब भाषा में शाश्वत और सत्यों का उद्‌घोष कराया
दी उन्होने सदाचार और निर्लेप...
जीवन की सीख...
सिक्ख शब्द रूप बना पर्याय शिष्य का
दे गये, हिन्दू समाज में, पंथरूपी नई इक दिशा...
और परम पूज्यनीय हुये अपने समाज के
समतामूलक, शांतिमय समाज का पाठ पढ़ाया
कर रहे, सादर-भेट उन्हे हम,
पूज्य श्रध्दा के सुमन अंजुलि भर-भर के
रहे पंथ खालसा अजर और अमर।।

--ooo--

१४ नवम्बर बाल दिवस

मोती के थे वे लाल,
जवाहर थे भारत माता के लाल
बच्चों के थे प्यारे,वो पुकारें
चाचा नेहरू...चाचा नेहरू...।
आनंद-भवन, इलाहाबाद में पलें
आनंद से रहा करते थे,
पर उनके सुखमय जीवन में,
इक दिन, ऐसा आया,
सारी खुशियो को त्याग,
देश की आजादी के खातिर
त्याग दिया अपने घर-परिवार को...।
गुलाबों के शौकीन,
काँटो को भी झेले,
और हुये स्वतंत्र भारत के,
प्रथम प्रधानमंत्री
विज्ञान-विकास भारत के प्रदाता...।
एक थी, उनकी प्यारी बिटिया,
नाम था जिसका इंदिरा
बाद में बन गयी, सबकी प्रियदर्शनी,
किया देश-परिवार का ऊँचा नाम....।
नेहरू परिवार-लोकतंत्र की
रणस्थली में देता आ रहा योगदान
अविरल-अविराम।
ऐसे थे, प्यारे चाचा नेहरू....
बच्चें उन्हें पुकारें चाचा नेहरू-चाचा नेहरू
भारत एक खोज की तलाश ने,
भारत के इतिहास की याद दिलाया
नेहरू जी का राष्ट्रीय योगदान
हम भूला ना पायेगें
बस चाचा नेहरू-चाचा नेहरू
हम पुकारते जायेगे, कहेगे
आराम-हराम है।।

अहिंसा का पुजारी गांधी-जयंती

मेरी काया से,
मैने कभी मोह न लगाया
सुखों में पला, दुखो को झेला,
जनहित में सारे, तन को जलाया।
देश की आजादी के खातिर,
भारत छोड़ो आन्दोलन चलवाया,
सत्य-अहिंसा का था, मै पुजारी
तन ढंकने, खादी को अपनाया,
स्वदेश प्रेम में, विदेशी कपड़े जलवाया।
जीवन में संयमता, अनुशासन का,
हरदम स्वाग रचाया औरों को भी सीखाया,
मरते दम तक,
अहिंसा को ही अपनाया।
मैं मरकर भी, विश्व में,
हिन्दुस्तान का नाम जगाया,
अहिंसा परामोधर्म के पाठ ने,
मुझे बापू से महात्मा गांधी बनाया।
मरते-मरते भी,
मारने वाले को दिया अभय जीवनदान,
प्राण निकलते ही कहा था हे राम,
और कर देना माफ उसे वो है नादान।
ऐसी महान वाणी को
करते हम प्रणाम।।
उनके गहन सामाजिक, दार्शनिक चिन्तन पर,
आओं इक बार तो, मंथन कर के देखे।।

--ooo--

कर्मठ पथ की राह... दिव्यांगजनों को समर्पित

हे, परमेश्वर...
चाँद और सूरज तूने बनायें,
फिर सूरज को दहकना,
और चाँद को चमकाना बताया।
दिन को रोशन किया सूरज बन,
अंधियारे को मिटाया चाँद बन
प्रकृति ने हमें बनाया परमेश्वर
मानवीय कृति में शब्दों से निःशक्तजन।
हे, परमेश्वर...
तन की शक्ति, मन की शक्ति
संजोकर निखरते रहेंगे सदा
पीछे न हटेगे पग, हरदम आगे बढ़ते ही जायेंगे
माना कि चाँद में दाग है,
फिर भी उससे हम सबका,
स्नहे तो कम नही...।
समाज के महकते गुलशन के हम पुष्प हैं सारे
कोई कांटो में खिला,
तो कोई कोमल शाखाओं में ।
हे, परमेश्वर...
जिसके नसीब में जो लिखा था
एक पुष्प मंदिर में चढ़ा, तो एक मजार में,
कई पुष्पों के गुच्छ शहीदों के शहादत पर चढ़े
पर कई फूल शाखों में तो खिले,
पर वो चाहकर भी, वो सौभाग्य कभी न पा सके ।
हे परमेश्वर...
समाज ने दिया है सम्मान तुम्हें
बढ़ते रहो तुम, कदम से कदम मिलाकर साथ
मकसद पूरा हो, कर्मठ पथ की राह है तुम्हारे साथ
कभी मन में दर्द का, एहसास न करना

हर इंसा को गिरकर-सम्हलना,
चोट खाकर-आगे बढ़ना
सबक जिन्दगी का,
यही सब, हम सबकों है पढ़ना ।
हे परमेश्वर...
उज्ज्वल पथ की डगर पर,
बढ़ाये चल तू अपने पग
आशाओं के टिमटिमाते दीप,
जगमगाने लगेंगे एक साथ
वह दिन दूर नही है, अब तेरे पास ।
हम सबकी, ईश्वरीय कामना है आपके साथ
शूल-फूल बन महकते रहे
और करे सुरभिमय जिंदगी,
अंर्तमन से उठ रहे संकल्पित विचार,
सहारा हूं मैं समाज का कभी न हारा समझो मुझको,
बुलंदी है मुझमें इतनी मील का पत्थर बनके....
दिखाऊँगा आज के बाद...?

--ooo--

प्रभु-महिमा

प्रभु को मन से बुला,
घण्टा बजाकर, शंखनाद कर के जगा,
ढोल-नगाड़े, झांझर, चिमटे थाल, ढपली,
बांसुरी बजा के जगा,
पर क्यूँ ऐसा होता है, कि मुझ ना-समझ को
समझ नही आता है
मेरे ही हाथों,
बनी रखी ये पाषाण की मूर्ति है,
मैने बेजान में,
जान प्रक्रिया की आहुति दी,
पर प्रभु तुम मेरी सुनते नही,
मैं कहता हूं तुझसे,
जब प्रभु
तेरे हृदय में बसत
अंग-अंग रोम-रोम में समाये होते,
इसे जगाने, हे मानव,
तूने क्या जुगत नही करी,
पर तू जान ले,
सच्चे मन से याद कर,
तेरा, भव-सागर, तर जायेगा।
क्योंकि, स्वस्थ शरीर में ही,
लेता स्वस्थ मस्तिष्क,
इस ज्ञान महिमा से,
जीवन दर्शन के गुण रहस्य को
समझ जायेगा ।।

--ooo--

पाषाण

कभी चकिया तो,
कभी घर की फर्शी,
तो कभी, किले की दीवार,
तो कभी मकबरा और मजार,
तो कभी स्मृति की मूरत,
तो कभी आस्था की सूरत,
रूप चाहे, मैं कुछ भी पाऊँ
पर, अब जान लिया मैनें,
प्रभु ठोकर से, एक सिला में,
मानवता जागी थी,
मुझ पत्थर में, प्रभु जो बसते है,
इसीलिये, सब मुझको पूजते है,
मेरी प्रकृति कठोरता है,
पर त्याग की नम्रता भी,
अब भी मुझमे बाकी है।।

--ooo--

हे पथिक

राह ऐसी चल, हे पथिक,
लौटकर, आते वक्त,
एहसास हो उस पथ को भी,
कि गुजरा था यही मुसाफिर ।।
राही जब-जब पथ से, भटक जाता है,
मंजिल पास होकर भी,
उसे वो छू नहीं पाता है,
भटकाव का, वो कारण जान लेता है,
उसे खुद-ब-खुद मंजिल का पता मिल ही जाता है ।।

--ooo--

गौ-माता की महिमा

हे इंसान तुमन
गौ माता को, माँ तुल्य है पूजा
वह अपना जीवन त्याग कर भी,
अक्सर दे जाती है, अपनी चमड़ी,
बनते जिससे ढोल-नगाड़े
और चरण पादुकाये
जो तेरे पैरो को अक्सर ठोकरो से बचाते,
और बनती मसके,जो
कुँये से पानी भरकर लाते,
लोगो की, फसलों की, प्यास है बुझाते,
इसीलिये अरमान कहता है,
आप से
माँ की महिमा को तुम जानो
आज-माँ नहीं होती
तो, ये जगत भी नहीं होता,
इसीलिये हर मजहब में
माँ का दर्जा है ऊँचा
कैसे इसका कर्ज, चुका पायेंगे,
बस यारो तुम
दिल में, रखना हमेशा श्रध्दा का भाव,
अपनी हर धड़कन में,
सदा माँ का ही एहसास पाओगे ।।

--ooo--

माँ की महिमा

माँ की महिमा जानो,
माँ नही होती,
तो, तेरा जीवन न होता,
गंगा माँ, नदिया, नही बनती तो,
तेरी वैतरणी कौन पार लगाता,
धरती माँ न होती,
तो तेरी भूख कैसी मिटपाती,
गौमाता नहीं होती तो,
तेरी फसलें, कैसे लहलहाती,
पर आज माँ का, त्याग तू जान,
माँ को खोकर भी,
रखता तू एहसासों में सदा अपने आस-पास,
गंगा माँ है, तुझसे कितनी दूर,
पर तू हर नदी जल में,
गंगा माँ का एहसास है करता,
धरती माँ कहलाती मातृभूमि,
जब हो जाता इससे दूर
जा बसता, विदेशों में,
अपनी धरती माँ से
फिर, तुझकों याद आती है, बहुत ।।

--ooo--

डोली

इक डोली सँजी,
और बिटिया हो गई पराई,
इक डोली उठी,
और जिन्दगी हो गई पराई
इक कहलाई विदाई,
और इक कहलाई अंतिम विदाई,
दोनो पलों में थे,
सबके आँखो में आँसू,
यहां इक ओर दो परिवार का अनूठा मिलाप
और एक ओर उसने, दे दी हजारों को रूसवाई।
डोली, तेरी अजीब कहानी है
लकड़ी की महिमा को,
तूने सच्ची पहचानी है,
बचपन से बुढ़ापा और मरने तक
तू हमारा हरदम साथ निभाती है।
लड़की, लकड़ी और डोली
तीनो की है, मिलती कितनी एक जैसी कहानी।।

--ooo--

यौवन की मादकता

यौवन पर, इतराने वाले,
जान ले इतना,
गुंजे भी गिरते, अक्सर दरख्त से।।
यौवन का, तू कर ले ऐसा सदुपयोग,
जैसे गुंजे भी गिरकर,
सज जाये, यौवन बाला के जुड़े से।।
यौवन पर, इतराने वाले,
भटकन की, राह होती है, कितनी आसान,
क्षणिक सुख देती है,
पर, जीवन भर के लिये,
बदनाम भी तो कर जाती है।।
यौवन पर, इतराने वाले,
मादकता, तू ज्ञान की पा ले,
सँवर जायेगी, जिंदगानी तेरी भी,
खुद तो सँवरेगा, बाद में
औरों को, सँवारने की बात,
तेरे मन में, अपने आप गढ़ जायेगी।।

--ooo--

बदलाव जमाने....का

जमाने को दोश देने वाले,
बताओ, जमाने को, किसने है बदला,
तुमने ही तो, अपनी इच्छाओं की भूख है, बढ़ाई,
इसीलिये, आज है, इतनी महंगाई,
खेती की जमीन है घटी, आबादी है इतनी बढ़ी,
पत्थर रूपी मकान हैं बढ़े, जल, जंगल भी कम हुये,
इंसानियत भी, क्यों है आज मरी पड़ी,
और हैवानियत बेतहाशा है बढ़ी,
धन-दौलत की भूख ने, रिश्तों के अर्थ हैं बदले,
पर अरमान खुद से कहता है
फिर तुम क्यो नहीं बदले।।

--ooo--

मौसम बदलते है

मौसम, प्रकृति का, है अनुपम उपहार,
देता, वनस्पति-जीवों को नव-श्रृंगार
वनस्पती में जब आती बासुंती बहार...
और जीवन में, तब महकता इसका गुलजार ।।
मौसम बदलते हैं, पर, रिश्ते नहीं टूटते हैं,
मौसम में, तपिश है तो शीतलता भी, है उतनी,
तो ही बरसते सावन की घटाएं भी,
हर मौसम देता प्रकृति को ऐसा अनुपम उपहार,
गर्मी में होती चाहत,
अक्सर शीतल पेय की...
बरसात में होती जरूरत, अक्सर छतरी की,
और ठण्ड में होती, जरूरत शालो व स्वेटर की,
मौसम, ही है... जीवन के अनूठे रंग...
इसे, जान जाये, जो इंसान,
बदलता नहीं कभी, रंग वो इंसान ।।
मौसम से, शिकायत करने वाले,
अरे वो नादान...
जरा, जान ले, तू इतना
मौसम की तरह... हरपल जीना सीखना...
और तब महक उठेगी...
तेरे जीवन की फुलवारी,
और होगी फिर...
चहुँओर हरियाली व खुशहाली ।।

--ooo--

भटका-राही

अनजानें में, भटक गया है तू,
इसीलिये कहता है, अरमान आज तुझसे,
अपनों से पी, गैरों में रहकर भी खूब पी,
होश में रहकर, गम ईर्ष्या और बुराई, क्रोध को तू पी,
देखना-मेरे भाई, धीरे-धीरे कैसे बदल जाता है..?
तेरा जीवन और तेरा घर-संसार ।।
अनजाने में भटक गया है तू...
इसीलिये कहता हूं आज तुझसे...
फिर न होगी परिवार और अपनों से कलह,
और मिटते रहेंगे, वो सारे नासूर-जख्म,
जानते हुये भी, क्यों पीता है...?
इसी धरती पर, है स्वर्ग, तू नरक में क्यों जीता है,
समाज में, बार-बार, अपमानित हुआ, फिर भी पीता है,
अब समाज में, तू शान से जीना सीख...
पीना छोड़, अब सुख से तू जीना सीख ।।
अनजाने में भटक गया है तू...
इसीलिये कहता हूं, आज तुझसे,
हर एक मादक नशा, पहले खुद को,
फिर परिवार को, अक्सर...
आर्थिक रूप से बरबाद कर देता है,
सामाजिक प्रतिष्ठा भी खोता है,
और धन-तन भी खो देता है ।।
अब तू कसम खा, नहीं पीऊँगा, ऐसे जहर को,
जो ले जा रहा तुझे...
मौत की अनजान डगर को...
मैं देर से जागा तो सही...
अब युवाओं को भी बचाना है ।।
अनजाने में भटक गया है तू...
इसलिये कहता हूं, आज तुझसे...
तुझे, अपने समाज में फैली कुरीतियों को,
जड़ से हरगिज मिटाना है, ऐसा प्रयास कर तू ।।
अब मुझे, समाज सेवा, जनसेवा करके...
उन अंधेरो में भटको हुओं को,
फिर से नई रोशनी दिखाना है...?
ताकि उनका भी हो,
खुशहाल व सुखी भावी जीवन-संसार ।।

--ooo--

फासला

सरकारी मुलाजिम,
जब हम बन जाते हैं,
नेता, सरकार और अधिकारियों के
रौब-हुक्म को हरदम पचाते हैं,
जिसे भूल से भी अपचन हो जाय,
ये उसे कालापानी की सजा दिलवाते हैं ।।
अंग्रेज तो चले गये,
पर लार्ड मैकाले की, शिक्षा-नीति का,
हरदम पाठ, हम-सबको पढ़वाते हैं,
किन्तु, नेता तो, पांच साल में...
पुस्तैनी जायदाद बना जाते हैं...
और हम-मरकर भी...
अपनी, जमा-राशि, परिवार को,
दिलवा नहीं पाते हैं ।
पेंशन पाने, हमारी आत्मा...
कार्यालय के फाईलों में ही भटकती, रहती है ।
देखा है हमने उसके साथी ही,
उसका श्राध्द करते हैं...
पर, हवन-सामग्री का खर्च
उसकी विधवा पत्नी से ही मंगवाते हैं...
घर पर बेटा है बेरोजगार पड़ा,
नौकरी वालों की उम्र बढ़ी है, तो क्या हुआ...?
पर वो तो अब भी खाली हाथ खड़ा है ।
स्वरोजगार, अपनाने की नीति
सरकार खूब बताती है... पर,
विदेशी कंपनी और ग्लोबलाइजेशन...
उदारीकरण, ऑन-लाईन मार्केटिंग, का
धीमा-जहर भी... तो फैलाती है।
विलासिता की चीजें हुई है सस्ती,
क्या-भूखे-पेट हम

आधुनिक इलेक्ट्रानिक गजैटस का
मजा कैसे ले पायेंगे..?
देश में सरकार किसी की भी बने...
शेर की हरकत तो वही है...
और बिल्ली, बिल्ली ही रह जाती है ।
ये अपने, स्वार्थ के लिये,
कुछ भी नौटंकी करते...
या कभी भूख-हड़ताल,
तो कभी खाली प्रदर्शन ही करवाते हैं,
ये नवीन संस्थाओं, नये कार्यो का,
उद्घाटन तो शौक से करवाते हैं,
पर, पुराने स्कूलों, भवनों का, जीर्णोधार,
बामुश्किल ही करवाते हैं ।
जिसे क्षेत्र से... चुने और जीत जाते हैं...
उसे घर की मुर्गी दाल-बराबर मानकर...
उससे कोई सरोकार ही रख पाते हैं ।
जीवन दर्शन की बेदी में...
राष्ट्रीय एकता व नैतिकता, बची रहे और,
भारत का लोकतंत्र विश्व में अमर रहे!
समाज का यही फासला...
सदा मिटता रहे और
जनसमुदाय में खुशहाली का
बिगुल बजता रहे।।

--ooo--

मानवता

मानवता के मर्म को,
जान ले, तू इंसान,
खुद को जिन्दा रखना है तो,
दूसरों की कर तू सेवा भरपूर,
पलटकर दुआ भी मिलेगी भरपूर,
जैसा बीज कर्म का बोयेगा,
वैसा ही फल, जीवन में चखेगा ।।

--ooo--

रस्सी

तिनके-तिनके, रेशे-रेशे मिलकर,
अक्सर बन जाते धागे,
और कई धागे मिल,
बन जाती मजबूत रस्सी,
अपनी मजबूती, दिखाती कई कारनामें,
कुंए से पानी खींचे,
जहाज को एंकर में बाँधे,
पर चुपचाप एक देती सीख हम सबको,
संगठित रहोगे सदा तुम इंसान,
हर मुश्किल काम भी फिर होगे आसान ।।

--ooo--

झील

झील के पानी में,
तू नादान पत्थर न फेंक,
वरना, उसकी नीरवता मिट जायेगी,
उठेंगी तरंगे, होगी हलचल...
मछलियों की नींद टूट जायेगी ।।
अपनी खुशी के लिये...
दूसरों को चोट पहुँचाने वाले...
ठोकर जमाने की, इक दिन तुझे भी,
जीने का ऐसा सबक सीखायेगी।।

--ooo--

समय चक्र

टार्च की रोशनी में,
बेखौफ अंधेरे में,
चलने वाले...
जरा इतना तो,
तू जान ले
तेरे पीछे होता है,
घोर अंधेरा...
पर, ये रोशनी तो,
तुझे नया जीवन दर्शन देता है।।
मसले, हल करने,
ज्ञान की मशाल जलायें,
तभी विचारों को,
नई रोशनी मिले,
तभी चमन में,
समरसता के गुल खिलें।।
हाथों के रास्ते,
तुम्हारे दिल में बसते हैं,
रक्तदान से हम
तुम्हारे जिन्दगी में बहते है।।
शर्मो-हया क्यों... बेनकाब हुई...
क्या तहजीब की,
जमाने में कद्र न हुई...
बुजुर्गों के दामन है,
सदा इससे भरी हुई...
पर न जाने क्यूँ...
नौजवानों से...
ये बाते, आज क्यों इतनी दूर हुई ।।
दोस्ती का मतलब,
हमे समझा रहे है, जनाब
पहले, अपनों का हमदर्द,
बनकर तो...
तू अब दिखा जनाब ।।
मंहगाई की गहराई को ठीक से,
आज तक, किसी ने ठीक से न समझ पाया,

विलासिता और विज्ञान ने,
हमें बहुरूपिया जो बनाया,
इसीलिये, अर्थशास्त्र के गणित को,
आज तक, किसी ने, ठीक से समझ न पाया ।।
अच्छी टी.वी. सुन्दर बीवी,
की मांग, अब बढ़ रही है...
पर सार्थकता किसकी कितनी है,
जमाने को समझाना बेतुकी है ।।
--ooo--

कतरनें

चाहतों का मतलब,
अक्सर प्यार नहीं होता,
यौवनता को लुटाने की,
और भी राहें हैं, मेरे दोस्त,
जरा, तू सही गुरू तो चुन,
इक मामूली पत्थर से तू
मूल्यवान हीरा बन, चमक जायेगा ।।
हसरतों ने, चाहतों ने
अक्सर मुझको धोखा दिया है...
चाहत, जिन्हें पाने की थी,
उन्हें मैं मयखाने में ढूंढता रहा,
और पता उनका पूछता रहा,
नशे में, कि मंदिर किधर है।।
--ooo--

शराब

वनस्पति सड़कर बनती.....
है शराब,
और एक बन जाती है टॉनिक
पर एक का काम है,
जीवन हरना.....
और दूसरे का, जीवन तारना ।।
--ooo--

काँटे और फूल

कांटो के बीच,
सदा फूल है मुस्कुराता,
एक फूल, जीवन को महकाता,
एक फूल, मुर्दे का, कफन बन जाता ।
फूल और कांटो में,
रिश्ता होता है गहरा,
जब, जीवन में फूलों की ताजगी हो,
तो महक जाती जीवन की बगियाँ,
जब होते काँटे,
शूल बन जाती है जीवन की रतियाँ
फूलों सा, महकने का, अंदाज, जब तुम.....सीख जाओगे,
कभी सरहदो की सीमाओ से,
बंधे नही रह पाओगे ।।
--ooo--

सलाखें

जेल की सलाखें,
और उसके पार खड़ा कैदी...
मुलाकाती को देखता है,
और मन ही मन वो बुदबुदाता है,
कि, सलाखों का...
मेरी जिन्दगी से क्या वास्ता है...?
इसे, अब मैं समझ पाया हूँ ।।
--ooo--

रेत

जिन्दगी कभी, सरिता-सी बहती ,
तो कभी, रक्त तप्त लोहा बन जाती है,
तो कभी, रेगिस्तान की मरीचिका,
तो कभी सागर की
उठती लहरें बन जाती है,
आज न जाने क्यों...?
हमारी जिंदगी...
रेत की तरह... हाथों से फिसलते जा रही है।।
--ooo--

गहना

गहना बिन, तन अधूरा
अधूरा हो जाये जीवन
पति जैसा हो न, कोई प्यारा... गहना...।
संतानो...सा...
कितना, अनमोल...गहना...
परिवार में
खुशीहाली का तोहफा... है गहना...।
मंगल-सूत्र, सतीत्व/नारीत्व
का है- प्यारा... गहना...।
फिर भी लाज है
नारी...का सर्वश्रेष्ठ... गहना...।

गुलों का एहसास

महकते गुलों ने,
जीने का एहसास कराया,
वरना जिन्दगी, वीरान होये जाये रही थी।
मै, एक सूखा दरख्त था,
जिस पर, सिर्फ
चील, कौवें, बाज, उल्लू
कभी-कभी बैठ जाते थे,
मेरी टहनी, बोझ से,
टूटती जाती थी,
पर मुझे, महकते गुलों ने,
जीने का एहसास कराया
इसीलिये अरमान कह रहा आपसे
गुल-गुलशन गुलफाम की तरह
जीने का अंदाज, बयाँ करोगे,
सदा महकते, सदा पूजते रहोगे
ऐसे ही, लोग, हरदम याद किया करेगे
जिन्दगी में खुशबू
अपने लिये जीने से नही फैलती,
गर, किसी गिरते को सहारा
इक पल भी देवे
तो सँवर जाती,
अक्सर बोझिल जिन्दगी।
खुशियाँ, तुम में छिपी है
जरा, अपने अंतश में,
झाँककर एक बार तो देखो।
वे, सूखा दरख्त कितना हरा नजर आयेगा
सिर्फ मंथन चिन्तन तो
इक बार कर के तुम देखो।।

--ooo--

हँसना है, कितना मुश्किल...?

लोग, अक्सर कहते
किसी को
हँसाना, है कितना मुश्किल काम।
पर, ये कारनामा
कर दिखाया
हास्य-व्यग्य रस ने
कही पर है हँसाया
हास्य कलाकार नें,
पर जिसकी जिन्दगी मे,
हँसी ही गायब हो चुकी है,
उसे कौन हँसा पायेगा।
हँसकर, खुद खुशी पाते, औरो को भी
खुशी दिलाते, उनके चेहरे भी खिल जाते।
हँसकर देखो, स्वस्थ जीवन, तनाव से मुक्ति
पर किसी की कमी पर था दुःख पर
कदापि न हँसे
विलासिता-प्रतियोगिता भरी जिन्दगी में
लोग हँसना, भूल गये है
सिर्फ तनाव ग्रस्त, हरपल-हरदिन है ।
आओ देखे हँसना है,
कितना आसान।
चलें प्रकृति की गोद मे
देखें, उसमें रहस्य और रोमांच
महसूस करे
उसकी हरकत को देख
खुद-ब-खुद
हँसी से हो जाओगे, लोटपोट।
फिर अरमान का नुस्खा,
मुफ्त में खुशियाँ और हँसी लुटायेगा।
--ooo--

वक्त की कलम से

सुनहरे सपनों के खातिर,
नई सुबह की किरणे देखी थी,
हर पल खुश हो, और बढते रहे भी आगे,
हुआ विकास तो, कुछ विनाश भी ।
सुनहरे सपनों के खातिर,
नई सुबह की किरणें देखी थी
मान लिये, ये नियति का मिजाज है,
कही धूप तो कही छाँव है,
कही खुशी तो, कही अवसाद है।
गुजरात की आज और बात है,
ढेरों खुशियों की फैली वहाँ बिसात है
मोदी के हाथों में है अब मोदक के लड्डू
हौसले, जजबे से जीती जाती है जंग
कहावत हुयी है चरितार्थ आज के संग ।
सुनहरे सपनों के खातिर
नई सुबह की किरणें देखी थी
वर्श-२००७ हौले हौले बीत रहा है
राज्य में छाया, नक्सलवाद का कहर है
वीर जवानों ने दे दी कर्तव्य के खातिर शहादत
पर हुयी माँ की गोद सूनी
विधवा के आँसू की बहती धारा
बाबू कब आओगे, बेटी कैसे पुकारे,
वो, गाँव दे रहा, उनको अंतिम बिदाई,
बंद आँखो से उन्होने अपने कर्तव्य
की बात पुनः दोहराई है...।।
सुनहरे, सपनों खातिर...
नई सुबह की किरणें देखी थी...
वक्त की कलम से, स्याही सूखती नही...
समय की धारा उसे सतत बहने की स्फूर्ति देती,
इसीलिये तो ये अभिव्यक्ति तुम तक आयी है...
शायद तुम्हारे...मन में भी होगे कुछ गुबार...
उसे बाहर तो लाकर देखो...
कर रहा वक्त इंतजार-अपनी तुम कलम तो उठाकर देखों ।।

--ooo--

घटना-क्रम

लोकतंत्र में चुनाव,
न जाने क्यो, दिनो-दिन, बदनाम हुआ जा रहा है।
मुझे वोट दो,
मैने हाथ जोड़ा था,
उसने, तुमको, वोट दिया था,
इसीलिये तो, उसका हाथ भी तोड़ा था ।।
देखो आज... लोकतंत्र में...
गुण्डों में पढ़ाई का,
महत्व, कितना बढ़ा है,
इंजीनियर होकर,
आतंकवादी घटना से जुड़ा है,
होती कही... बैंक डकैती, अपहरण, लूटपाट,
और नकली नोटों की छपाई, का रोग तेजी से बढ़ा है।
उसके ऊपर सेलफोन और एस.एम.एस का
युवाओं में आतंकवादियों में, बढ़ता तेज बुखार है,
लोकतंत्र में कभी खुशी, तो कभी बदनामी का ज्वार है।
आओ-देखें गणतंत्र के देश में, अबके चुनाव में,
गेहूँ के साथ, क्या पिसने वाला है?
जनता है खामोश, पर है समझदार...
क्यो कि देश में घोटाला, कर्ज और,
भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, मंहगाई का,
और पैसो, वालो का...
चारो तरफ, देखों कैसा बोल बाला है।
जिधर देखो, खुशहाली के साथ छिपी कंगाली है,
आज भी धान के कटोरे में,
बेबसी, अकाली और लाचारी है,
फिर भी लोगो से सुना करता हूं,
छत्तीसगढ़िया सबसे बढ़िया,
वोतो-चाऊर और नून में है मस्त,
मै कहता हूं आपसे...
हकीकत में इसका क्या मतलब है..?
मुझको तुम बतलाओं यारो...
लोकतंत्र में... जाने क्यो आज...।।

--ooo--

बसन्त-बयार

आया मौसम ऐसा...
बागों मे, खिलने-महकने लगे सुमन,
भौरों-तितलियों का, हो रहा गुंजन,
अमुआ के डाल पर फुदकने-चहकने लगी कोयल
अमुआ के बौरों से फैल रही
भीनी-भीनी गंध कर रही ऐसा मदहोश...
तन-मन में छायी अजीब सी मस्ती।
क्या...?
ऐसी ही होती है, बसन्त की बयार...।
बागों में खिलने-महकने लगे सुमन,
भौरों तितलियों का हो रहा गुंजन...
धरती ने ओढ़ ली पीली चुनरिया,
सरसों के खेतो के अम्बार से...
झड़ने लगे वृक्षों की पत्तियाँ और छाल
ऐसा होकर, निखरता उनका यौवन
अजीब की खामोशी बिन पत्तों के छाती पेड़ों मे,
ऐसा लगता मानों सूखकर विरही वृक्ष खड़ा है
फिर भी...
बागों में खिलने-महकने लगे सुमन
भौरों-तितलियों का हो रहा गुंजन
शिव-भक्तों में छाया भक्तिरस की धूम,
शिवरात्रि का हुआ आगमन हो गया भक्तीमय वातावरण
फिर कान्हा की बांसुरी ने ऐसी धुन है सुनाई...
गोपियाँ नाचने-गाने झूमने लगी...
कहने लगी,
बसन्त-बयार ने लायी ऐसी मस्ती,
तन-मन में कौतुहल है क्यो जागा
कहने लगी गोपियों
संग नाचो-गाओं फाल्गुन जो आया
फिर भी....
बागों में खिलने-महकने लगे सुमन
भौरों-तितलियों का हो रहा मनमोहक गुंजन ।।

--ooo--

होली उत्सव बहार

होली का रंग,
खुशियाँ होंढेरों संग,
फिर भी पिचकारी में,
भरें हो, कैसे उदासी का रंग...।
साथी हो पास में,
उदासी हो जाती है दूर,
उसमें भर दो अपनेपन का रंग,
कभी नही छूट पायेगा,
होता है ऐसा स्नेह का रंग।
प्रकृति के है अद्‌भूत रंग,
चलते रहों उसके संग,
जीवन के आयामों में,
होता रहेगा परिवर्तन
मिलेगी तुम्हे कभी खुशी-कभी गम के रंग।
होली का रंग खुशियाँ होंढेरो संग,
पर्यावरण संतुलन भी हो संग,
भंग में हो रंग, पर
रंग में कभी न हो भंग।
उड़ा रहा अरमान होली का ऐसा रंग,
समय बदलते रहेगा,
पर स्थायी रहेंगे यादो के रंग...।

--ooo--

चाहत कुछ पाने की...?

खूबसूरत दिखने की चाहत में,
रसायनिक मिश्रण से,
खुद का चेहरा, मेकअप कर झुलसाया है,
मेरे दर्पण ने,
कल ही मुझको बताया है।।
स्टार बनने की चाहत में,
मुझे मुम्बई बहुत भाया है,
पर वहां मेरा जिस्म, जिम्म नही,
सिर्फ महानगरी की माया है।।
मन की बदसूरती पर,
नकली खूबसूरती का रंग चढ़ाया है।।
अच्छा बनने की चाहत में,
बेरोजगार पड़े है कब से,
उम्र बढ़ी अवसाद बढ़ा,
कुछ भी हासिल न हुआ
हर दिल सिगरेट की तरह
जलते और बुझते रहे।।
गर इंसान चाहे तो,
कोई भी काम छोटा या बड़ा नही होता,
चाहत लगन और परिश्रम की हो, तो
बदल जायेगी जिन्दगी कल तक,
वो सुबह आज नही तो कल....
सुनहरा, सपना लेकर अवश्य आयेगी।।

--ooo--

फूलों की प्रदर्शनी

फूलों सा चेहरा,
कितना होता है हँसी,
फूलों की ताजगी देती कितनी सुकून।
फूलों सी मुस्कुराहट देती कितनी राहत,
फूलों सा हँसना-मुस्कुराना सीखे...
फूलों सा होगा,
हर-पल, हर-दिन,
फूलों सी खुशियाँ,
मिलेगी औरों को भी...
आओ जतन से...
इक पौधा, फूल का भी लगाये...
रोज-रोज, उसे पलते-बढ़ते और
फूलों से खिलता-लदतें देखे।
क्या आनंद-रस-भाव...
मिलेगा और जीवन-दर्शन में...
इसका मंथन तो कर के देखे...।।

--ooo--

हिन्दी-दिवस

देवनागरी लिपि व भाषा,
राष्ट्रीय चेतना की मशाल है।
हम सबका परम कर्तव्य है,
इसे, सदैव प्रज्ज्वलित रखें।।
मुझे, तुम गुलामी की जंजीरों से...
मत जकड़ो,
मै मुक्त गगन में,
स्वच्छंद तितली की तरह,
उड़ते रहना चाहती हूं।।
बोली-भाषा, राज्य-बंटवारों ने,
किया मुझकों आहत इतना,
राष्ट्रभाषा बनकर भी,
वहां सम्मान उतना नही पाया।
राष्ट्रीयता देशभक्ति आजादी का मतलब,
शायद, मैनी सही अर्थो में,
नही समझा पायी हूं ,
इसीलिये इतनी आहत, आज तक होती आई हूं।।

--ooo--

पानी बनाम नीर

जलनें में, जल उस पर डालें,
होगी जलन भी दूर...।
पानी-बिन सब-सून,
सोचें संचय करें, भविष्य सुखमय बनावें।
मानव में पानी नही-वह शानी नहीं।
जल-शीतलता, शुद्धता-तरलता से परिपूर्ण-
अपनावे-सतुंष्टी...।
सागर भरा पानी से...
पर, प्यासे, हम पीने के पानी से...।
पानी की चाहत-करो न वृक्षों को आहत...।
पानी सा, तुम मिल जाओं सब में,
मिटे और मनमुटाव मन से।
गर्मी में पानी... सभी माँगें।
हरदम पानी-पानी की बात...
तुम्ही बताओ, तुम अनमोल हो कैसे...?
अतिवृष्टि, अतिवर्षा-जलमग्न... विनाश...?
मेरे रूप अनेक, फिर भी पानी-जल
मेरे बिन तुम अधूरे रह जाओगे...
मेरी महिमा है निराली...
जरा इक बार मंथन करके देखों...।।

--ooo--

रिश्ता-बनाम-रिश्ते

रिश्ता, सम्बन्ध-लगाव-अपनापन-संस्कार... सुरक्षा
रिश्ते... जुड़ाव।
रिश्ते-सम्बन्धों-की बुनियाद-जुड़े रहते तो,
होती जिन्दगी, उतनी ही खुशहाल।
रिश्ते-माता-पिता-का संतानों से,
दोस्ती में-दोस्तों का,
घर में पड़ोसी का,
कक्षा में सहपाठी से,
अजनबी से मानवता का,
राष्ट्र से राष्ट्रीयता का...।
रिश्तों-का सही मतलब समझे।
नये रिश्तों से जुड़ने के पूर्व
जाँचे-परखे-फिर जुड़े।
कभी रिश्तों को बदनाम न करें...
ये जुड़कर, कभी-घटते नही,
सिर्फ हमने ही...
अपने स्वार्थ से तोड़ा है, किन्तु
बाद में पछतावा भी हो,
पर क्या कर सकते हैं?
आज... प्रेम, परिवार, पति-पत्नी... अलगाव
तो कभी तलाक...।
वृक्ष से-फूल-पत्ती,
पानी से, मछली का, शरीर से सांस का...।
बताते से इसकी अहमियत...
जरा इस पर सोचे...
और मंथन करके देखे...।।

--ooo--

नया साल आया...२००८

सपने सबने कहा देखो....
नया साल आया... नया साल आया।
प्रभात की प्रथम किरण,
भोर में ओस की मोती सी दमक लाया
चिड़ियो की चहचहाट और
भौरों का मदहोशी गुंजन,
तितलियों का फूलों पर,
मस्ती से मंडराना, इतराना, इठलाना
सबने कहा देखो....
नया साल आया... नया साल आया।

आकाश में कपसीले बादलों का छाना
मौसम में गुलाबी ठण्ड की बयार का आना,
कही बर्फीली फुहारों का बरसना
क्या ये सब ले आया है... तोहफे में,
इसीलिये, सबने कहा देखो....
नया साल आया... नया साल आया।

नई रोशनी, नई हसरतों, नई खुशियों के...
सुगंधमयी पुष्पों की उपवन में बहार-सा ले आया
पेड़ों मे पतझड की शुरूआत,
तो गुलाबों में छायी है कैसी मनभावन बहार
सूरज का दक्षिणायन से उत्तरायण में शुभागमन
नये साल की दस्तक है दे रहा
फिर सबने कहा देखो....
नया साल आया... नया साल आया।

फिर धीरे-धीरे दस्तक देने लगी
मौसम के मिजाज में आयाी गर्मी
जिसने भर दी हरकाम में गर्मजोशी
केलेण्डरों मे तारीखों की लिख गई नई इबारत
और उसे देख बना ली सबने, नई कार्य-योजनाये
सबने कहा देखो....
नया साल आया... नया साल आया।

कैसे बीतायेंगे ये साल...?
कर लो बस इतना सा ध्यान सही योजना बनाओं,
सही लक्ष्य का करो निर्धारण,
करना होगा, हमको भरपूर प्रयास इसी कयास में,
निकल न जाय, अब ये साल
इसीलिये सबने याद दिलाया
देखो-देखो... नया साल आया...।

कर लो इसका गर्मजोशी से स्वागत।
इसने नई-नई सौगातो को,
अपने में समेट कर, है लाया
सबने कहा देखो....
नया साल आया... नया साल आया।
--ooo--

राष्ट्रीय-अभियन्ता दिवस

शिल्पी हाथों ने,
किया चमत्कारिक, अद्‌भूत नवसृजन,
अर्जित, तकनीकी ज्ञान से,
सबकों कर, दिया अंचभित,
अपने कलात्मक डिजाइन से,
बनाया, कही बाँध तो,
कही सड़के, तो कही भव्य ईमारत ।
क्या धरा, क्या गगन
सबमें, अपने कौशल का,
अद्‌भूत जौहर, कर दिखाया ।
भूत-वर्तमान और भविष्य के विविध, नव-प्रगति के
इस जगत को
अजूबों के आयामों से
कैसा अनूठा श्रृंगारित कर सजाया है ।।
शिल्पी हाथों ने,
राष्ट्रीय गौरव और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान दिलाया है,
अब अभियन्ताओ,
ले लो शपथ
नैतिकता केबल पर
भ्रष्टाचार को त्याग कर
ईमानदारी का निर्माण कर,
असंभव को संभव बनायेगे ।

--ooo--

मुरझाए फूलों का मोल

सूखे-मुरझाए फूलों का भी,
अपना, एक मोल होता है, यारों
पूछो केसर से,
कैसे रंग देती है, जिन्दगी तुम्हारी...।।
पूछो उस गुलाब के फूलो से,
बनकर जब गुलकन्द,
तो कभी इत्र, तो कभी गुलाब जल,
हश्र सड़कर, गलकर, सूखकर,
महकाते सदा आपके मन को ।।
सूखे मुरझाए फूलों का
नसीब है, कितना अच्छा,
रंगोली, होली का रंग,
और कभी, रंगरेज के संग,
तो कभी बन जाता, माथे की कुमकुम,
तो कभी, गुलाबी गालों की चमक,
मानव जीवन में, सुख-दुख दो किनारे हैं,
यही है... जीवन-दर्शन का सच्चा रंग ।।
सूखे-मुरझाए फूलों का भी
अपना, एक मोल होता है
सदा यारो, उसकी अहमियत को तुम जानो,
जिसने अच्छाई बोयी है और अच्छाई बाँटी है,
दुनिया उसके कदमों की शानी,
संसार से अलविदा हो जाने पर भी,
उसकी, होती एक अमिट निशानी है ।।

--ooo--

कैंसर रोज-डे

लोग कहते है
मैने धूम्रपान किया,
सुख और मौज के खातिर,
फिर, अब क्यों..? हो चली,
मेरी नासूर और दर्द-भरी जिन्दगी।।
पहले था, मेरा चेहरा
खिला-खिला, भरे-भरे गाल,
रोज दर्पण में, देख होता था खुशहाल,
और लगता था जैसे
खिलता हुआ, लाल गुलाब
नूर टपकता था, तब यौवन से...।।
पर अब, दिखने लगा थका-हारा,
चेहरे में झुर्रियाँ ही झुर्रियाँ
लगता बूढ़ा-सा मुरझाया चेहरा,
मैनें, शौक के खातिर,
दबे पाँव से महामारी को दे दी दावत,
जिसे डॉक्टर कहते है... कैंसर,
अब दिख रहा... गले, मुँह और फेफड़ों में
इसका गहरा असर, दोस्तों...।।
अब मैं सोचता हूं...
ये शौक, है कितना खतरनाक...
पहले-पहल, लगता है अच्छा
पर, अब जीने में लग रहा अर्द्ध-विराम,
आज से, सोच लिया,
मैनें मन ही मन में, और
संकल्प लिया, नहीं करूँगा, इसका कदापि सेवन,
अब लगा दूंगा, इस पर सदा के लिये पूर्ण विराम...।।

--ooo--

सफर

साथ अगर,
ये अजनबी, तुम्हारा होता,
कभी, फासला न होता,
मेरी जिन्दगी में,
रथी बन तुम,
आगे ले जाओगे जिन्दगी को....।
सफर- हो कैसे भी, जिन्दगी का,
अक्सर बन जाता, सुहाना सफर,
मार्गदर्शक हो, या कोई साथी
जैसे-शिक्षा-शिक्षक-शिक्षार्थी का मेल,
पाकर बेहतर शिक्षा,
खेलते अक्सर, कामयाबी का खेल,..।
अक्सर, गुजर जाते, समय के साथ,
फिर भी अवसर होता है सबके पास,
जान लो और चल पड़ो उस राह,
सीखो, जीवन जीने की शिक्षा
सफल हो जायेगा सफर
लक्ष्य ऐसा, रखो तो।।
समय के पल सफर साथियों के संग,
बनते खुशियों के,
अक्सर, खट्टी-मीठी, यादो के पल,
यादें रहेगी, सिर्फ इन्ही पल की,
बुनों तुम भी, इक सुनहरा सपना,
चल पड़ो उस मंजिल की ओर
और शुरू होगा, लक्ष्यपूर्ण सफर
सफर-अनन्त-अनवरत-सागर है,
जो, आपकी जिन्दगी की अंतिम सांसो
का सच्चा-साथी है...।

--ooo--

कामचोरी

अक्सर,
जब-जब हमने अपने काम को,
पूरा न करने का बहाना बनाया,
वहाँ से कामचोरी का जन्म हुआ...।
कामचोरी है, बनावटी कार्य करने का,
दिखावा, पर है ये सब,
अपने आप से छलावा...।
जिस प्रकार, शेख चिल्ली,
जिस डाल पर बैठा और
उसे ही काट देता है
दिखता क्षणिक सुख,
पर इसका परिणाम है,
जिन्दगी भर का दुःख
अनुशासन हीनता का आचरण,
साहस-जोखिम की कमी,
विश्वास हीनता, आशा के बदलें...
निराशा का, सदा-बीज बोते है ।
क्या तुम भी कामचोरी करते हो...?
यदि हाँ तो उस पर इक बार...
फिर से मंथन करके देखें,
क्या मिलेगा,
क्या हल निकलेगा,
फिर अपने, आपको बता देना ।।

--ooo--

चाहत खूबसूरती की

खूबसूरत बनने की चाह ने,
क्यों खुशी-कभी गम दिया है,
एक दिन के लिये,
चेहरे पर रौनक लाकर,
कई दिनों के लिये,
मुहॉसे से भर दिया है,
खूबसूरत बनने की चाह ने.....
किया बालों का कट
और कर दिया पहनावे को भी हॉफकट
खूबसूरत बनने की चाह ने...
कर दिया भोजन कम,
डाइटिंग के नाम पर,
खूबसूरती, बनावटी,
दूसरों को दिखाने भर की होती है।
इसका अंजाम खुद की,
प्राकृतिक सौन्दर्यता,
को भी ले डूबती है,
शारीरिक रूप से रहोगे, हरदम स्वस्थ,
तो अपने आप, खूबसूरत नजर आओगे,
ये खूबसूरत चेहरा औरो को लुभाते रहेगा,
और आपसे, आपकी खूबसूरती का राज,
लोग पूछते रह जायेगें ।

--ooo--

नाम– एच. एस. अरमो "अरमान"

जन्मतिथि– 23 जुलाई, 1959

जन्मस्थान– ग्राम– खजरा, पोस्ट– गढ़ी, तह.– बैहर, जिला– बालाघाट (म.प्र.)

शिक्षा– एम. कॉम

प्रकाशन– तकनीकी शिक्षा पाठ्यपुस्तक (हिन्दी में, पॉलीटेक्निक हेतु) "व्यक्तित्व विकास एवं निखार" प्रकाशक– म.प्र. हिन्दी अकादमी भोपाल म.प्र. वर्ष 1997. मासिक पत्रिकाओं में कविता एवं आलेखो का प्रकाशन, शोक पत्र का प्रकाशन इत्यादि।

सम्मानः– वर्ष 2001–02 हेतु ए.आई.सी.टी. नई दिल्ली द्वारा तकनीकी हिन्दी पाठयपुस्तक लेखन हेतु व्यक्तित्व विकास एवं निखार पाठ्यपुस्तक को द्वितीय पुरस्कार हेतु चयनित एवं सम्मान पत्रक तथा राशि 31000 से सम्मानित किया है। इसके अलावा छत्तीसगढ राज्य की सामाजिक संस्थाओं एवं साहित्यिक संस्थाओ द्वारा समाजिक सेवा हेतु एवं साहित्यिक सेवा के लिए सम्मानित किया है जैसे भारतीय दलीत साहित्यि अकादमी छत्तीसगढ शाखा धमतरी आदि संस्थाओं द्वारा। एवं राष्ट्रीय स्तर पर डा. अम्बेडकर फेलोसीप नेशनल अवार्ड 2012 भारतीय दलित साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा प्रदत एवं समाजिक सेवा संस्था इंडियन सौलीडेटीक काउन्सील नई दिल्ली द्वारा इंटनेशनल एजुकेशन एक्सीलेंट अवार्ड (इंटनरनेशन अवार्ड इन दुबई, वर्ष 2013)

ईमेल– himmatsinghmom@gmail.com

MO. No. 09425202803

सम्पर्क– क्वा. क्र. एफ/7, आवासीय परिसर शासकीय कन्या पॉलीटेकनिक बैरन बाजार रायपुर छत्तीसगढ 492001

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.– 9424765259, ईमेल– antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-242-5

मूल्य 250/–